ज्ञानामृत

जनवरी, 1981
वर्ष 16 ❋ अंक 8

मूल्य 1.75

परमात्मा ही से
पवित्र
प्रेम-धारा
प्रवाहित
होती है

एक
शिव ही से
शीतलता
और
शान्ति का
वरदान मिल
सकता है।

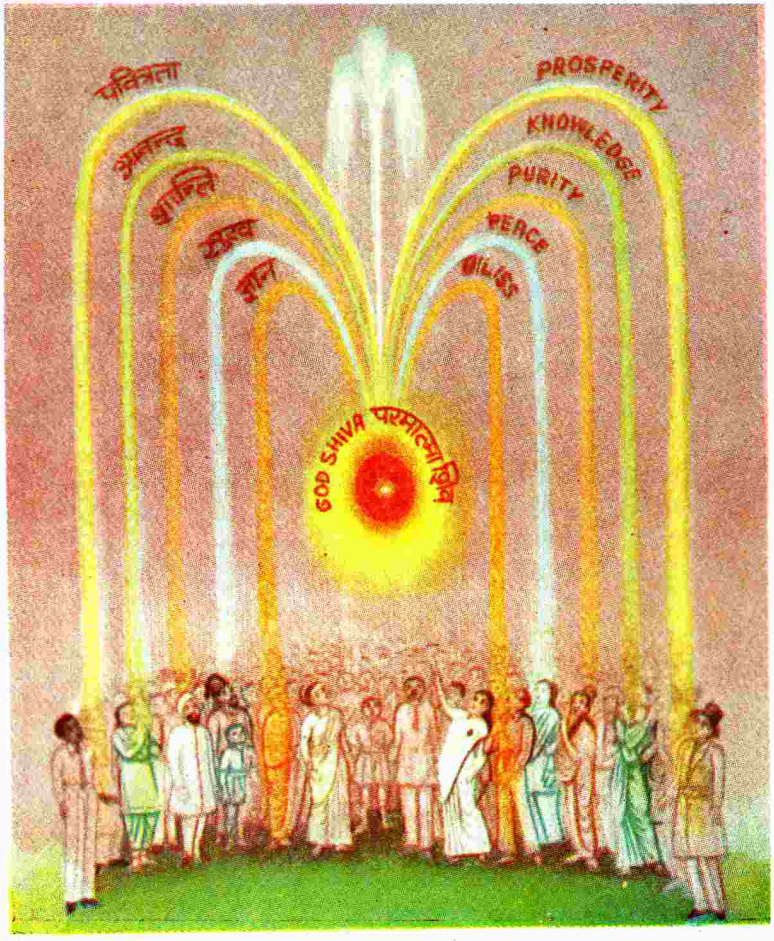

सत्य
ज्ञान का
निर्मल
स्रोत
एक शिव
ही है

जो उसकी
धारा के
नीचे
आता है,
वही
सुख-शान्ति
पाता है।

व्यक्त शरीर में होने पर भी इनसे अव्यक्त भाव की झलक मिलती है और मन को नेत्रों द्वारा आराम अनुभव होता है। ऐसा नेत्राभिराम, भव्य छटा थी मीठे बाबा की।

श्वेत वस्त्र धारी ब्रह्मा बाबा

बच्चों के मन को मासूम रीति से बहलाने के लिए बाबा कोई कमी न छोड़ते। उन दिनों मधुबन में अपनी ही एक छोटी बैल गाड़ी थी सामान स्थानान्तरित करने के लिए। उसे साफ कराया गया था, बाबा उस पर बैठे हैं, साथ में हैं जालान बाबू और अन्य बच्चे। गाड़ी की सवारी, कैसी यह न्यारी।

अमृत-सूची

१. सब का दाता एक है··· (मुख पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित)	१	१३. पुरुषार्थ	२२
२. निराले बाबा (सम्पादकीय)	२	१४. एक अविस्मरणीय वृत्तान्त	२३
३. पिता श्री ब्रह्मा (कविता)	७	१५. कहनी है एक बात हमें इस देश के कर्णधारों से	२५
४. तुमने स्वर्ग की कलम लगाई	८	१६. ब्रह्मा बाबा के प्रति	२६
५. सेवा समाचार चित्रों में	९	१७. युवा वर्ग और विश्व-परिवर्तन	२७
६. पवित्रता का सफ़र	११	१८. ईश्वरीय कर्तव्य का इतिहास	२८
७. स्मृति और विस्मृति	१५	१९. योग की चोटी पर शीतलता	२९
८. क्या से क्या हो गया···	१६	२०. सेवा समाचार (चित्रों में)	३१
९. ज्ञान चर्चा	१७	२१. एक छोटी-सी चिंगारी, भयंकर आग	३३
१०. "हम बढ़े चलेंगे"	१९	२२. शिव भगवानुवाच 'अभी हमारी भी सुनो'	३४
११. क्या यह चमत्कार नहीं है ?	२०	२३. यह वक्त जा रहा है	३६
१२. पवित्र बनो—राजयोगी बनो	२१	२४. आध्यात्मिकता का महत्त्व	३७

मुख पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित

सब का दाता एक है जिस देवे सो पाय !

परमपिता परमात्मा ही सदा परिपूर्ण हैं। वे ज्ञान के सागर, शान्ति के सागर, आनन्द के सागर, प्रेम के सागर, सर्वशक्तिमान्, परम पवित्र, और सर्व के कल्याणकारी हैं। वे देहातीत, मायातीत, कर्मातीत और फलातीत हैं। वे ही करुणाकारी तथा परोपकारी भी हैं। कलियुग के अन्त में जब सारी सृष्टि में दुःख, अशान्ति तथा अपवित्रता का वातावरण होता है तब वे ज्ञान, पवित्रता, शान्ति और आनन्द के स्रोत बनकर सभी आत्माओं पर इनकी वर्षा करते हैं। वे मनुष्यात्माओं को जातीय भेद की दृष्टि से नहीं देखते बल्कि सभी मनुष्यात्माओं को अपनी अमर सन्तति समझते हैं। वे सदा प्रवाहित रहने वाले एक शीतल झरने की तरह, अशान्ति से तप रही सभी आत्माओं को शान्ति तथा शीतलता प्रदान करते हैं। जो भी उनके पास आता है, वह अपनी प्यास बुझा सकता है तथा उनसे पवित्रता एवं शान्ति का वरदान पा सकता है। तथा उनसे पवित्रता एवं शान्ति का वरदान पा सकता है। मनुष्यात्माएं तो इन वरदानों को चाहने वाली, इनके लिए पुरुषार्थ करने वाली अथवा इन्हें प्राप्त करने वाली हैं। इनका दाता तो केवल एक परमपिता परमात्मा शिव ही हैं। उसकी स्मृति में रहने से मनुष्यात्मा आनन्द-विभोर हो जाती है।

निराले बाबा

१८ जनवरी के साथ बाबा की यादें अटूट रीति से जुट गई हैं। उन यादों में अनेकानेक वृत्तान्त एक चल चित्र की तरह मानस चक्षु के सामने से गुज़र जाते हैं। वे सभी चित्र जीवन पर एक विशेष प्रभाव छोड़ जाते हैं और ये मन-भावन प्रभाव फिर-फिर ताज़ा होते रहते हैं। उनमें से कुछेक यादें जो सम्प्रति मन में उभर आयी हैं, उन्हें हम यहाँ शब्द-चित्रों में प्रस्तुत करने का यत्न करेंगे :—

नेष्ठी नेत्र और देहातीत बनाने वाली शक्तिशाली दृष्टि

मधुबन में बाबा के सम्मुख अनेक बहन-भाइयों को बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ही है और सभी के अनुभव भी सुनने योग्य हैं। बाबा के सन्मुख बैठने का सौभाग्य लेखक को भी बहुत बार प्राप्त हुआ। हर बार के अनुभव की एक अनोखी ही दास्तान और एक निराली ही कहानी है। सन् १९५५-५६ में मधुबन में थोड़े ही से बहन-भाई होते थे। तब मधुबन में भोग के समय भी हम थोड़े-से ही लोग मातेश्वरी और पिता-श्री जी के सामने बैठे होते। तब हम बाबा से दृष्टि लेने पर जो अनुभव करते, उस निराले का अनुभव का स्मरण करके आज भी रोम-रोम में एक बिजली की लहर-सी दौड़ती हुई मालूम होती है। दृष्टि लेते हुए तुरन्त ही ऐसे लगता कि यह आत्मा उड़ते-उड़ते शिव बाबा के निकट जाकर पहुँची है। अपलक नेत्रों से आँसू बहने लगते परन्तु मन को ऐसा सुख अनुभव होता कि आँखें पोंछने अथवा आँखों को झपकने की सुध ही नहीं रहती और यदि कहीं ऐसा भान आ भी जाता तो भी अव्यक्त यात्रा के अनुभव से नीचे उतरने को मन तैयार न होता। इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के सम्पर्क में आने से पहले हमने ग्रन्थों में नेष्ठी-नेत्रों की बात पढ़ तो रखी थी परन्तु नेष्ठी-नेत्रों का साक्षात्कार तो बाबा के सामने बैठने से ही हो पाया। बाबा के नेत्रों की ओर देखने से अपने शरीर को भुलाने के लिए कुछ भी पुरुषार्थ न करना पड़ता और ऐसा लगता कि प्रकाश की गति से आत्मा अशरीरी होकर कहीं दूर-दूर आकाश से उस पार, ज्योति के देश में जाती जा रही है। यह अनुभव जितना ही सूक्ष्म होता था, उतना ही गहरा और उच्च पराकाष्ठा वाला (Intense) होता था जो बाद में भी आत्मा की स्थिति को अव्यक्त बनाए रखता था। इससे स्पष्ट ही यह समझा जा सकता है कि बाबा की योग-स्थिति कितनी परि-पक्व, शक्तिशाली एवं गहन रही होगी और वे स्वयं कितने देहातीत एवं अव्यक्त अवस्था में रहते होंगे।

शिव बाबा से अनन्य प्रीति

हम भोग की बात कह रहे थे। जिस प्रातः को भोग लगना होता, उससे पहले की रात्रि को विश्राम करने से पूर्व बाबा संदेशी को बुलाते और कहते—"बाबा❀ को दिल व जान, सिक व प्रेम से निमन्त्रण देना और कहना कि कल भोग स्वीकार करें।" जिस समय बाबा ऐसा कह रहे होते, उस समय बाबा के नेत्र बाबा का मुख-मण्डल और उनके हाव-भाव देखते ही बनता। बाबा केवल औपचारिकता के नाते से 'दिल व जान, सिक व प्रेम' आदि शब्द प्रयोग न कर रहे होते बल्कि इन्हीं भावों का स्वरूप होकर शिव बाबा की ओर आँखें करते हुए पूरे हृदय से कहते। बाबा जब यह सन्देश दे रहे होते तो कई बार जब यह लेखक भी वहाँ मौजूद होता और उसका भी

❀शिव बाबा। नोट—इस लेख में कहीं पर 'बाबा' शब्द ब्रह्मा बाबा के लिए और कहीं शिव बाबा के लिए प्रयोग हुआ है। विज्ञ पाठक वृन्द स्वयं ही जान सकेंगे कि 'बाबा शब्द' 'शिव बाबा' के लिए कहाँ प्रयोग हुआ है।

मन करने लगता कि सन्देशी मेरी भी याद बाबा को दे दे। तब बाबा मन के भावों को जानकर सन्देशी को कहते—"बाबा को कहना, जगदीश बच्चा भी बहुत-बहुत याद दे रहा था।" ऐसा कहकर वे मुस्कराते हुए प्रेम-भरी आँखों से हमारी ओर देख लेते कि हम उछलकर बाबा को अपनी बाँहों में ले लेते और बाबा हमें अपनी बाँहों में ले लेते। फिर जब हम बाबा की ओर देखते तब भी हम यही पाते कि हमें स्नेह का स्पर्श देते हुए भी बाबा स्वयं शिव बाबा ही की याद में है क्योंकि उनके मुखारविन्द से ये शब्द प्रवाहित होते—"बच्चे, तुम बाबा को ज्यादा याद करते हो या बाबा तुम्हें ज्यादा याद करते हैं ? देखो बच्चे, बाबा कितना मीठा है ! उसे याद करते ही कितना खुशी का पारा चढ़ जाता है !! ऐसे बाबा को भला भुलाया जा सकता है···?"

फिर जब भोग लगता तब भी कभी बाबा कहते—"देखो तो, यह संगम का समय कितना सुहावना है ! डायरेक्ट शिव बाबा के यज्ञ से यह भोग प्राप्त करने वाले आप बच्चे कितने सौभाग्यशाली हो ! भले ही देवताओं को सब पदार्थ प्राप्त होंगे परन्तु शिव बाबा का यह भोग तो उन्हें भी नसीब नहीं होगा। ओहो-हो बच्चे, कोई सोचे तो उसके कपाट खुल जायें। शिव बाबा का यज्ञ-प्रसाद अथवा भोग !! बाबा के साथ भोजन करने का अवसर !!! यह कोई कम बात थोड़े ही है।"

बाबा की एक-एक बात से ऐसा लगता कि शिव बाबा से उनका इतना घनिष्ठ प्यार है, उनके आत्मन में शिव बाबा की प्रीति ऐसे तो रम गई है कि वो उनके हर बोल एवं हर कर्त्तव्य में स्वाभाविक रूप से झर-झर होकर प्रवाहित होती है और दूसरों को भी उसके रौ में बहा देती है। उस रौ में कभी बाबा कहते "मैं उसकी सेजनी हूँ।" फिर कभी यह भी कहते कि वो मेरी वल्लि है। कभी वे कहते—"मैं उसका मुरब्बी बच्चा हूँ। शिव बाबा मुझसे बहुत प्यार करता है।" जब वे ऐसा कह रहे होते तब उनकी मुख-मुद्रा और उनके नैन-बैन देखने वाले होते। अपना अनुभव सुनाते हुए वे कहते कि स्नान करते समय मुझे ऐसा लगता है कि बाबा ही इन हाथों से लोटे भर-भर कर मुझे नहला रहे हैं। इसी प्रकार, भोजन करते हुए बाबा के हाथों की गति इस प्रकार की लगती जैसे कि वे ऐसा अनुभव कर रहे हों कि मानो शिव बाबा ही उन्हें एक बालक की न्यायी खिला रहे हों। सचमुच, उनका इतना प्यार था, इतना प्यार था कि दोनों बाबा अंग-संग रहते। संसार में ऐसी कई प्रसिद्ध प्रेम-कहानियाँ सुनी गई हैं जिनके अनुवाद देश-देशान्तरों में विविध भाषाओं में हुए-हुए हैं परन्तु ऐसा अटूट, एक-रस, निर्मल, सर्वांगीण, सर्वोच्च प्यार न कभी सुनने को, न पढ़ने को और न कल्पना करने को मिला है और न मिलेगा।

बाबा की याद और प्यार की लम्बी दस्तान कहाँ तक सुनायें, कैसे सुनायें ? बाबा की सारी अलौकिक जीवन-कहानी ही एक सर्वोच्च प्रेम-कहानी है। जैसे कोई प्रेमिका अथवा प्रेमी अपने स्नेह-भाजन के लिए अपना सर्वस्व लुटा देता है, ऐसा तो बाबा ने इस प्रेम-द्वार में प्रवेश करते ही पहले ही क्षण-पल में कर दिया। हम मीरा के गीत सुनते हैं कि वह प्रेम-दीवानी हुई और उसने लोक-लाज खोई, परन्तु बाबा की जीवन-गाथा में तो प्रम का वह रूप सर्वांगीण रूप में पनपा है। बाबा ने उस प्रभु-प्रेम में न केवल लोक-लाज खोई बल्कि संसार में जितने भी रूपों में अथवा जितने भी सम्बन्धों में प्रेम की अभिव्यक्ति होती है, उन सभी सम्बन्धों में शुद्ध प्रेम की एक तीव्र धारा बाबा के जीवन में देखने को मिलती और बाबा का प्रेम एक ऐसे प्रभु के प्रति प्रेम नहीं था जिसका कोई दैहिक रूप हो और जिसके बारे में आत्मा को केवल धुँधली ही पहचान हो बल्कि बाबा का प्यार उस प्रियतम के पूर्ण परिचय को लेकर उससे वैसे ही ताल-मेल बनाये हुए था जिसमें विछोह का नाम नहीं था, विरह-अग्नि नहीं थी, व्यथा और पीड़ा को स्थान नहीं था बल्कि माधुर्य, लालित्य और आत्मीयता का परम उत्कर्ष था।

ज्ञान और प्रेम का अद्भुत मेल

यह ठीक है कि बाबा में ज्ञान की एक अथाह

गहराई थी, तभी तो उनके जीवन में ज्ञान की एक अजीब मस्ती झलकती थी और तभी वे सदा यही कहते कि यह ज्ञान अनमोल और अविनाशी रत्न हैं। परन्तु वह ज्ञान कोई शुष्क ज्ञान न था। ऐसा भी नहीं कि वे ज्ञान को प्रेम की केवल पुट (Coating) देते थे बल्कि यों कहना ज्यादा ठीक होगा कि वे जिस ज्ञान की बात कहते, वह प्रेम पूर्ण ज्ञान था और जिस प्रेम का झरना सदा उनके जीवन में बहता, वह ज्ञान प्रेम पूर्ण था। ज्ञान और प्रेम का उनके जीवन में ऐसा तालमेल था कि दोनों को अलग-अलग बताना असंभव-सा था। जो उनके सम्पर्क में आये हैं, उनमें से कोई तो कहेगा कि उनके जीवन में प्रेम अधिक था और अन्य कोई कहेगा कि वे प्रारम्भ में प्रेम का आश्रय देकर ज्ञान की सुदृढ़ भित्ति पर टिकाने की कोशिश करते। वास्तव मे यह देखने वाले की दृष्टि का अन्तर है और अपनी-अपनी जगह दोनों ठीक भी हैं। वास्तव में बाबा के ज्ञान के बोल प्रेम के बिना होते ही न थे और उनके प्रेम के बोलों में सदा ज्ञान भरा रहता था और प्रेम तथा ज्ञान—दोनों का लक्ष्य मनुष्यात्मा को पवित्र और योगी बनाना ही था।

ज्ञान और प्रेम साहित्य-वितरण के रूप में

बाबा ईश्वरीय ज्ञान को इतना मूल्यवान समझते थे कि उन्होंने निर्देश दिया हुआ था कि ईश्वरीय ज्ञान के साहित्य को बेचा न जाये क्योंकि बेचने का अर्थ इसका मूल्य चुकाना है जबकि वास्तव में यह अनमोल है—इसका मूल्य कोई चुका ही नहीं सकता। पुनश्च, वे यह भी कहते हैं कि इस ज्ञान को सुन्दर से सुन्दर रूप में, अच्छे से अच्छे काग़ज़ पर छपवाया जाये क्योंकि इतने उच्च ज्ञान को रद्दी काग़ज़ पर छपवाना और इसकी घटिया-सी छपाई कराना गोया इसके मूल्य को न समझना है। वे कला और सौन्दर्य को भी महत्त्व देते तथा सुपठनीयता को भी। इस रीति से साहित्य सांसारिक दृष्टि से महंगा हो जाता है। इस पर भी बाबा कहते कि इसे बेचना नहीं है क्योंकि सभी मेरे बच्चे ही तो है, उन्हें साहित्य दाम पर थोड़े ही दिया जायेगा? गोया ज्ञान के साथ-साथ मनुष्यात्माओं के प्रति उनका प्रेम भी उतना ही था कि वे कहते कि इसका मूल्य न लो। परन्तु हुआ यह कि मनुष्य-आत्मायें रूप बच्चे अपने अलौकिक पिता के इस प्रेम के पात्र न बन सकें। कहीं भी हम मेज़ पर साहित्य रखते तो लोग उस पर छीना-झपटी करने लगते और कई-कई प्रतियाँ उठा ले जाते। तब भी बाबा के प्रेम में कमी नहीं आई। बाबा ने इसे आय का साधन नहीं बनाया बल्कि प्रेम-वश इसे जन-जन को वितरित करने की सीख दी ताकि कोई आत्मा इससे वञ्चित न रह जाये। इसके अतिरिक्त बाबा ने कई अन्य आलौकिक तरीके बताये। जब अंग्रेजी भाषा में रीयल गीता (Real Gita) छपवाई गई तब बाबा ने उसके प्रारम्भ में एक सूचना संलग्न करने का निर्देश दिया। उसमें लिखा था कि इसमें का ज्ञान अनमोल खज़ाना है। इस पुस्तक का केवल उतना ही दाम रखा गया है जितने इसके काग़ज़ और छपाई पर आया है। यदि पढ़ने पर किसी को पसन्द न आये तो वह ठीक हालत मे इसे वापस लौटाकर अपने दाम वापस ले जाये। वह इतनी बड़ी पुस्तक थी और उसके दाम इतने कम थे कि उसे लेने वाले आश्चर्यान्वित होते थे। आज तक भी लोग उसकी प्रतियां माँगते हैं।

हर परिस्थिति में बाबा की याद

बाबा का शिव बाबा से ऐसा तो ज्ञान-युक्त प्यार था कि वे हर परिस्थिति को निमित्त बनाकर उनकी याद में रहते। वे कोई 'टोली' (प्रसाद) बाँटते तो भी पूछते—"क्या शिव बाबा को याद किया है और यदि कोई समस्या सामने आती तो भी कहते कि शिव बाबा को याद करो तभी पुरुषार्थ में पूर्णतः आएगी।" जैसे किसी छोटे बच्चे को प्रातः जागते ही माँ की याद आ आ जाती है और उसके मुख से "माँ-माँ" शब्द ध्वनित हो जाते हैं अथवा जैसे किसी प्रौढ़ व्यक्ति को अपने परिवार की सुधि बनी ही रहती है, वैसे ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा की प्रेम-विभोर स्मृति बनी ही रहती।

इसीलिये वे सदा उस ही की चर्चा करते। एक बार बाबा शरद ऋतु में वत्सों सहित पहाड़ी पर घूमने गये तो लौटने के समय तक धुन्ध इतनी बढ़ गयी कि दो फुट आगे का मार्ग भी दिखाई नहीं देता था। सभी थोड़ी देर रुके रहे ताकि धुन्ध कम हो जाये। परन्तु धुन्ध और कोहरा (Fog) कम हुए ही नहीं। तब बाबा ने मुस्कराते हुए सन्देशी को कहा—"ध्यानावस्था में जाकर बाबा से कहो कि वापस जाना है, वहाँ सभी हमारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे, परन्तु रास्ता ही स्पष्ट दिखाई नहीं देता···!" सन्देशी अव्यक्त स्थिति में, ध्यानावस्था में गयी और उसने बाबा को यह बात कह सुनाई...।" खैर, वह एक अलग ही किस्सा है परन्तु प्रस्तुत प्रसंग में इसका उल्लेख करने का भाव यह है कि लौकिक, स्थूल परिस्थितियों को भी बाबा शिव बाबा की याद का निमित्त बना लेते। बस, बाबा, बाबा, प्यारे बाबा, मीठे बाबा ही की याद उनके मन में बनी रहती। जैसे रात्रि को दो घनिष्ठ दोस्त, छोटे बालक, सोने के लिए अपने-अपने घर चले जाते हैं और प्रातः होते ही फिर एक-दूसरे को उसके घर से बुला कर पढ़ना-खेलना आदि शुरू कर देते हैं, ऐसे ही बाबा शिव बाबा के बिना रह ही न सकते। वे तो पूरी रात्रि भी एक-दूसरे से विदा न होते। प्रातः दो-ढाई-तीन बजे तो बाबा उठ जाते ही परन्तु वे तो कहा करते कि—मैं बाबा ही के साथ सोता हूँ। यह प्यार और याद का कैसा ताँता और नाता है !!

शिव बाबा के यज्ञ की संभाल

उन दिनों बाबा प्रातः क्लास के बाद विश्राम कक्ष (Chamber) में भी वत्सों से अनौपचारिक रूप से ज्ञान-चर्चा किया करते। यह वही कमरा था जहाँ आजकल दीदी जी का कार्य-स्थान और निवास-स्थान है। एक बार बाबा वहाँ वत्सों के समक्ष ज्ञान-चर्चा कर रहे थे। वत्सों ने देखा कि बाबा के एक पांव के अँगूठे को छोटी-सी पट्टी बन्धी हुई थी। एक वत्स ने पूछा—"बाबा, यह क्या हुआ है ?" बाबा ने कहा—"बच्ची, रात्रि को जब सोया हुआ था तो स्वप्न में देखा कि इस कमरे के सामने वाली पहाड़ी पर वत्सों के वस्त्र सूख रहे हैं। (आजकल जहाँ आफ़िस और जिज्ञासु कक्ष है, पहले वहाँ पहाड़ी थी) तब यह भी देखा कि कुछ पशु अन्दर घुस आये हैं और वे कपड़ों को उठाकर चबाना चाहते हैं। तो बाबा ने सोचा कि उठकर इन्हें हटाना चाहिए और शिव बाबा के यज्ञ की चीज़ों को हानि पहुँचाने से बचाना चाहिए।" बाबा बोले—"मैंने जल्दी से जाने की कोशिश की तो स्वप्न-अवस्था में ही जैसे ही पाँव को आगे बढ़ाया, वैसे यह दरवाज़ा पाँव-से थोड़ा-सा लगा। उससे बहुत मामूली-सी झरीट आई है। बच्चे, थोड़ा-बहुत जो हिसाब-किताब है, वह तो सामने आता ही है और चुकता होता जा रहा है। हम ब्राह्मणों को इस यज्ञ की हरेक चीज़ की संभाल तो करनी ही है न ? बच्चे, बाबा हर बात का ध्यान रखता है कि कहीं बच्चों की ग़फ़लत से शिव बाबा के यज्ञ की कोई चीज़ नुकसान न हो। इसलिए बाबा यहाँ समय निकाल कर एक-आध चक्कर लगा कर भी देखते हैं कि कहीं कोई वस्तु व्यर्थ तो नहीं जा रही।" इस प्रकार, बाबा न केवल प्रीति-पूर्वक याद ही करते और न केवल ज्ञान में रमण ही करते बल्कि कर्त्तव्य करने में भी किसी से पीछे न रहते बल्कि सभी से अधिक उन्हें ही सेवा तथा यज्ञ-कार्य का ख्याल रहता। गोया शिव बाबा के प्रति उनका जो घनिष्ठ प्यार था वह उन्हें कर्म में भी प्रवृत्त करता था।

अद्भुत सन्तुलन

जैसे बाबा के जीवन में ज्ञान और प्रेम का अद्भुत ताल-मेल था वैसे ही बाबा के जीवन में हर प्रकार से सन्तुलन था। वे देही-अभिमानी (Soul-Conscious) बनने पर तो पूरा ज़ोर देते ही थे परन्तु देह के स्वास्थ्य और उसकी संभाल की अवलेहना करने को नहीं कहते थे। हाँ, वे यह तो कहते थे कि बार-बार शारीरिक अस्वस्थता की चर्चा करके हमें अपने श्वास वृथा नहीं गंवाने चाहियें क्योंकि आज जबकि प्रकृति तमोप्रधान है और हमने अज्ञान काल में

विकर्म भी किये हैं तो रोग और व्याधियाँ तो शायद आयेंगी ही, अतः उन्हीं में मन-बुद्धि लगाये रखने से तो हम शिव बाबा की याद के लिए समय निकाल ही नहीं पायेंगे। अतः वे कहते—"बच्चे, दवा और दुआ दोनों से काम लो और रोग की अवस्था में भी योग को न भूलो वरना देह-अभिमान का संस्कार पक्का होता जायेगा।" इस पर भी वे यह कहते कि यह शरीर मूल्यवान है, अतः इसे कोशिश करके ठीक रखो ताकि इस द्वारा ईश्वरीय सेवा भी कर सको और आपके योग-रूप पुरुषार्थ में विघ्न न पड़े।

इसी प्रकार, बाबा अच्छा भोजन खाने के लिए भी कहते हैं परन्तु साथ-साथ यह भी सम्मति देते कि अपने पेट-पालन पर ही अधिक खर्च न करो और कि पदार्थ खाओ भले ही परन्तु उनके प्रति आप में आकर्षण नहीं होना चाहिए। अतः वे जीवन को शुष्क बनाने के लिए न कहते परन्तु साथ-साथ सादगी, स्वच्छता और सात्विकता पर भी बल देते।

कोई स्थान-बाग-बगीचा आदि घूमने या देखने के योग्य होते तो वे उसे देखने या वहाँ तक जाने के लिए मना न करते बल्कि कई बार स्वयं ही कहा करते कि जाकर उसे देख आओ, परन्तु दूसरी ओर वे यह भी कहते कि "बच्चों में घूमने और देखने का शौक या व्यर्थ की हॉब्बी (Hobby) नहीं होनी चाहिए।" वे कहते कि किसी ऐतिहासिक अथवा प्राकृतिक सौन्दर्य के स्थान को देखो तो उसको देखते हुए भी अपनी योग-स्थिति को मत छोड़ो और आने वाली सतयुगी सृष्टि के अतुल सौन्दर्य को मत भूलो। अतः वे कहते कि सदा यह याद रखो कि शिव बाबा हमें जिस अद्भुत सतयुगी सृष्टि में ले जा रहे हैं, वह तो अतुलनीय है, उसकी आभा और शोभा, उसका सुख और सौन्दर्य अद्वितीय है। इस प्रकार, बाबा विचित्र रीति से सन्तुलन रखते और योग-स्थिति को बनाये रखने की ओर ध्यान दिलाते।

बाबा के जीवन के जिस पहलू की जितनी चर्चा करें उतनी कम है। उनके मुख पर सदा मुस्कान होती परन्तु वे अन्तर्मुखी और गम्भीर भी होते; वे खूब टोली खिलाते और पिकनिक (Picnic) कराते परन्तु साथ-साथ वे बाज़ार के खान-पान से मन हटा देते और मन की तृष्णाओं को भी शान्त करा देते; वे अथक रीति से सेवा करने तथा कर्म करने में प्रवृत्त करते परन्तु वे उतना ही ध्यान अपनी मनोस्थिति और अपने परम पुरुषार्थ पर दिलाते और अलबेलेपन से होने वाली अवर्णनीय क्षति के प्रति भी सचेत करते; वे मनोविनोद तथा खेल-मेल में भी ले जाते परन्तु उतनी ही महत्ता वे विदेहावस्था, उपराम अवस्था तथा मौनावस्था को भी देते। इस प्रकार, एक निराला और सर्वांगीण व्यक्तित्व था बाबा का जो प्रेरक भी था, आकर्षक भी, आदर्श भी था, व्यावहारिक भी, लौकिक चर्चा में भी कुशलता लिये हुए था और अलौकिक तथा पारलौकिक दृष्टिकोण से भी सर्वश्रेष्ठ था।

—जगदीश

(पुरुषार्थ पृष्ठ २२ का शेष)

परछाई के समान रहा। विश्व की आधुनिक महान् विभूतियाँ महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, मार्क्स लिंकन, नेहरू, पाल, लाल आदि की सफलताओं का कारण भी इसी एकाग्रता यही एकाग्रता थी। के अभाव में व्यक्ति की प्रतिभा समय के पूर्व ही मुरझा कर नष्ट हो जाती है।

सच्चे पुरुषार्थी कर्म को अपने जीवन का सूत्र मानकर चलते हैं। भर्तृहरि ने कहा—"हम तो कर्म को ही नमस्कार करते हैं।" महान् लेखक "रस्किन" की यह वाणी भी दृष्टव्य है—"यदि तुम्हें ज्ञान की पिपासा है, तो परिश्रम करो। भोजन की अभिलाषा है, तो परिश्रम करो। आनंद की अभिलाषा है, तो परिश्रम करो।" स्वामी विवेकानंद की वाणी भी यही दर्शाती है—"शरीर तो एक दिन जायेगा ही आलसियों की तरह क्यों जाये।"

वस्तुतः पुरुषार्थी, एकाग्रता, दृढ़ता और आत्मविश्वाश के मणि-कंचन से मानव-जीवन सफल होता है। उसमें सूर्य का प्रकाश और चन्द्रमा की शीतलता का संगम होता है। और ऐसे जीवन से ही समाज और राष्ट्र का कल्याण संभव है।

पिता श्री ब्रह्मा

विजय अग्रवाल

जब नाश हो चुका
नीति का, सच्ची प्रीति का
शिक्षा का,
निन्दा होती है,
धर्म की
आपस में लड़ते हैं,
हिन्दु भी,
मुस्लिम भी,
ईसाई भी।
संकट के इस महाकाल में,
भारत में,
जन्मी थी
अनमोल विभूति
शुभ दिवस था
शुभ घड़ी थी।
स्वयं
'शिव' परमपिता ने
चुना
जिसे आधार बनाया
ओ वरद मनु
नव सृष्टि के
'पिता श्री ब्रह्मा'
तुम्हारा कैसे हो गुणगान,
तुम्हारा कैसे हो सम्मान !!
विश्व के उद्धार-निमित्त
धर्म के प्रसार-निमित्त
अज्ञान-तिमिर के परिहार-निमित्त
संस्कृति के सुधार-निमित्त
तुम बने निमित्त
स्निग्ध
मधुर भाषा में,
रसपान कराने
'ज्ञानामृत' का।
अद्भुत शक्ति
सचमुच तुममें,
प्रतिभा थी
भावमयी क्षमता थी।
करते रहते थे
सदैव ही,
'शिव' का गुण-गान
ओ नव सृष्टि के सृजन-निमित्त
तुम्हारा कैसे हो गुणगान
तुम्हारा कैसे हो सम्मान !!
ओ विश्व वंद्य
शिव के माध्यम
तुम्हारी दिव्य वाणी में
समावेश था,
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का
ओ युग पुरुष
महामानव
दैदिप्यमान रत्न
तुम्हें आज समर्पित
हमारा सर्वस्व
हम हैं वत्स।

तुमने स्वर्ग की कलम लगाई

नव युग के हे सृजेता ! हृदय की तरुणाई।
स्वयं योगी बनकर तुमने स्वर्ग की कलम लगाई ।।

देखा जब अधर्म बढ़ा और कलियुग का अन्त आया
निराकार शिव परमपिता ने माध्यम तुम्हें बनाया।
लिया आधार तुम्हारे मुख का गीता ज्ञान सुनाया।
मनुष्यात्माओं को ज्ञान से ब्रह्मा-वत्स बनाया।

अश्वमेध यज्ञ रचकर तुमने ज्ञान ज्योति जगाई।
स्वयं योगी बनकर तुमने स्वर्ग की कलम लगाई ।।१।।

विश्व-कल्याण प्रति तप किये थे, तब भगीरथ बनकर।
ज्ञान गंगायें तुम्हीं से निकली, पतित पावनी बनकर।
ज्ञान योग से पावन बनना जिनका जीवन ध्येय था।
ब्रह्मचर्य का पालन करना तुमसे ही सीखा था।

अमृत-वर्षा करके, तुमने मृत मानवता जगाई।
स्वयं योगी बनकर तुमने स्वर्ग की कलम लगाई ।।२।।

अधम, नीच, पापी भी तुम्हरे, दया पात्र बन जाते।
निहार दिव्य रूप को तुम्हरे, धन्य अपने को पाते।
भस्त, हताश, निराश हृदय में तुम नई चेतना भरते।
'बच्चे' कहकर उनका हृदय पितृ प्यार से भरते।

'बस मेरा ही बाबा है' कह कर करते तुम्हारी बड़ाई।
स्वयं योगी बनकर तुमने स्वर्ग की कलम लगाई ।।३।।

हे युग सृष्टा ! हे युग दृष्टा ! है आज तुम्हारा अभिनन्दन।
हे अटल तपस्या लीन पुरुष ! हे आदि देव आबू नन्दन।
हे दिव्य अलौकिक पुरुष वीर, करते तुम विकारों का क्रन्दन।
अखिल विश्व के, ब्राह्मण कुल के हृदय के तुम स्पन्दन।

ज्ञान यज्ञ उद्गाता तुम हो, विकारों की आहुति दिलाई ।
स्वयं योगी बनकर तुमने स्वर्ग की कलम लगाई ।।४।।

आंध्र प्रदेश में करनूल में आध्यात्मिक मेला का उद्घाटन करनूल के आर्य वैश्य प्रेजीडेन्ट रामालिगय्या तथा ब्र. कु. सरला दीप जला कर कर रहे हैं।

पण जी (गोवा) सेवा केन्द्र की तरफ से बाँदा में आयाजित सहज राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन भारतीय जनता पक्ष के नेता टेप काट कर रहे हैं, साथ में ब्र० कु० लता, ब्र० कु० शकुन्तला जी खड़ी हैं।

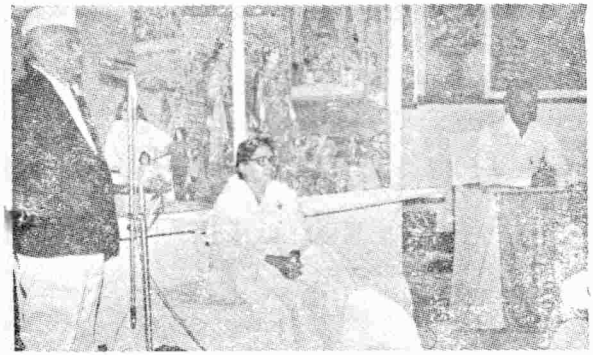

कानपुर नया गंज म्यूजियम के वार्षिक उत्सव पर मोती चन्द जो प्रवचन कर रहे हैं, सुमित्रा बहन मंच पर बैठी हैं।

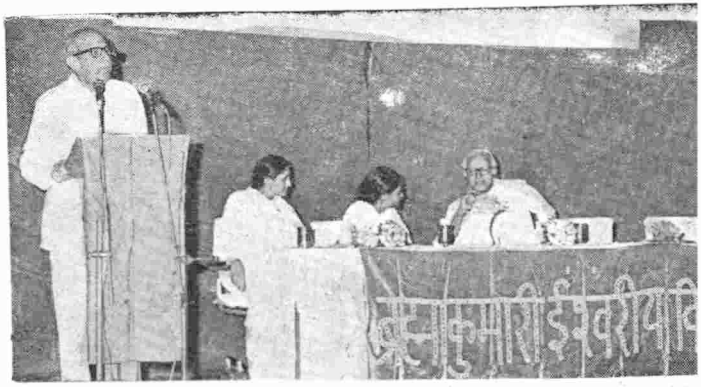

अलवर में आयोजित दिव्य जीवन निर्माण सम्मेलन में न्यायाधीश कुदाल भाषण कर रहे हैं, मंच पर भ्राता कृष्णा अय्यर जी तथा अन्य बहनें बैठी हैं।

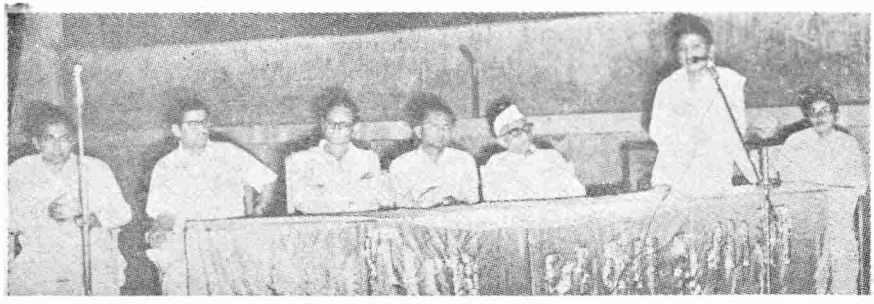

मेहसाना कुकरवाड़ा गांव में 'घनिष्ट ग्राम सुधार आध्यात्मिक समारोह' के उद्घाटन के अवसर पर ब्र कु. तृप्ति प्रवचन कर रही हैं, बायी ओर ब्र कु सरला और दायीं ओर नटवर लाल भ्राता प्रहलाद जी व अन्य भाई

D

का उद्घाटन कलक्टर रामबाबू जी कर रहे हैं साथ में अन्य बहनें व भाई खड़े हैं।

शहजादा नन्द कॉलेज की विद्यार्थी रीटा गुप्ता को ब्र० कु० चन्द्रमणि जी प्रथम पुरस्कार दे रही हैं।

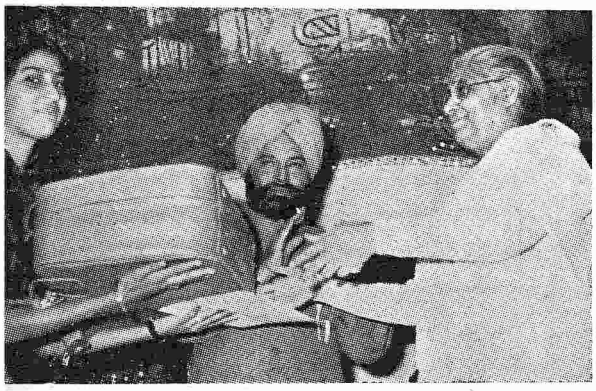

बिलासपुर के जिलाधीश भ्राता अभय शुक्ला को ब्र० कु० इन्द्रा राखी बाँध रही हैं तथा साथ में अन्य बहन भाई खड़े हैं।

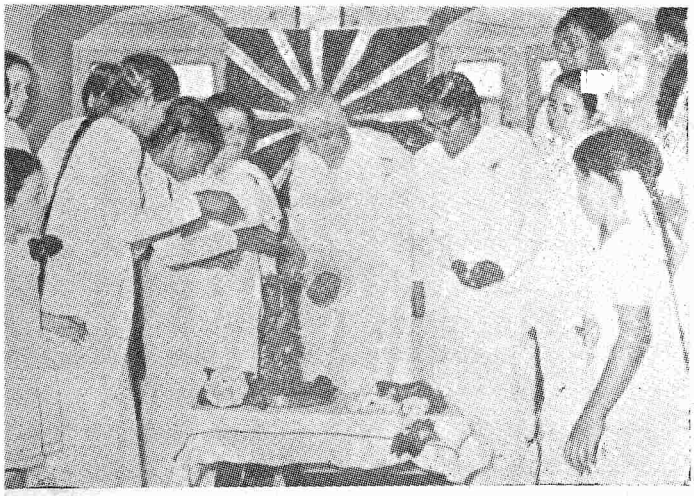

चिक्कोड़ी (कर्नाटका) सेवा केन्द्र का ब्र० कु० प्रकाशमणि जी ने उद्घाटन किया। चित्र में दादी जी के साथ अन्य बहनें खड़ी हैं।

लायन्स क्लब डीसा के एक महिला क्लास का उद्घाटन ब्र० कु० अनु बहन ने किया। लायन्स क्लब के प्रमुख व्यक्ति अनु बहन के साथ दिखाई दे रहे हैं।

पवित्रता का सफ़र

ब्रह्माकुमार सूरज, कुमार, मधुबन, आबू

नरेश के घर में जब भी कभी शादी आदि की बातें होती थीं, वह वहाँ से खिसक जाता था। बचपन से ही उसके मन पर भारतीय सन्तों की छाप पड़ चुकी थी। सोचता था कि मैं भी स्वामी विवेकानन्द की तरह आजीवन ब्रह्मचर्य धारण कर संसार को कुछ मार्ग दिखाऊंगा।

ज्यों-ज्यों नरेश यौवन की ओर बढ़ा, उसके मन में वैराग्य की अग्नि तेज़ी से दहकने लगी। क्या रक्खा है इस जग में, यों ही मानव दुःखदाई तृष्णाओं के पीछे भटकता है। विकारों की दुविधा में अन्धा बन बुद्धि को मलीन करता है। मैं इस प्रपंच में नहीं पड़ूँगा। जिस देह से मनुष्य प्यार करता है, वह भी कल सूखकर लकड़ी हो जाती है। जो आज सौन्दर्य है, वह कल नीरस होगा।

इन्हीं विचारों के साथ नरेश प्रतिदिन गीता-स्वाध्याय करने लगा। गीता पढ़ते-पढ़ते उसे बड़ा ही चैन महसूस होता था। गीता पढ़े बिना उसे कुछ खोया-खोया-पन लगता था। यह उसका दैनिक नियम बन गया था।

परन्तु कभी-कभी तूफान-से उफनते विचार मन की शान्ति को भंग कर देते थे। ब्रह्मचर्य···बड़ा भारी काम है यह तो। जीवन-भर ब्रह्मचर्य व्रत को निभाना···बाप-रे-बाप···पहाड़ उठाने-जैसा काम है। परन्तु ब्रह्मचर्य का बल है बड़ा भारी। महावीर हनुमान भी ब्रह्मचर्य के बल से ही तो महावीर था। फिर भी ब्रह्मचर्य को जीवन-भर निभाना—है तो क्लिष्ट ही।

जब नरेश सवेरे गीता उठाता था तो उसका मन फिर शुद्ध हो जाता था। सोचता था, कुछ भी हो, ब्रह्मचर्य को आजीवन निभाऊँगा ज़रूर।

जब इसी द्वन्द्व में नरेश का जीवन चल रहा था, उसे एक छोटी-सी पुस्तिका मिली। नाम था —'राज-योग'। अध्यात्म के जिज्ञासु को पुस्तक मिलते ही उसने उसे बड़ी तत्परता से उठाया और फटाफट पन्ने उलटकर सारी पुस्तक को देख गया। अन्त में राजयोग की विधि दर्शाई थी।

जैसे ही नरेश ने इस किताब को पढ़ा तो मन में अजीब-सी खुशी प्राप्त हुई, मानो उसे खोया हुआ लक्ष्य मिल गया हो। प्रथम दिन ही जब उसने पुस्तक में लिखी विधि-अनुसार योग-अभ्यास किया, बस उस दिन उसकी प्रथम अनुभूति थी कि अब तो जीवन-भर ब्रह्मचर्य को अपनाना सरल होगा। न जाने कौन-सा जादू था उस राजयोग में, जो नरेश के मन का द्वन्द्व शान्त हो गया।

अब नरेश रोजाना उस योग का अभ्यास करने लगा। उसने समझ लिया कि गीता के भगवान ने जो अनेक बार यह कहा है कि बुद्धि मेरे स्वरूप में एकाग्र कर, उसकी विधि यही है।

अब तो उसे धुन लग गई। किसने लिखी है यह पुस्तक, जिसने मेरे मन को हर लिया है। छान-बीन के बाद उसे पता लगा कि यह पुस्तक ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की ओर से प्रकाशित हुई है। बस, उसे तो मन का मीत मिल गया। उसने सीधा ब्रह्माकुमारी आश्रम का दरवाजा जा खट-

खटाया। सोचा था कोई साधु रहता होगा।

दरवाजा खुलते ही एक बहन जी का साक्षात्कार हुआ। नरेश हक्का-बक्का-सा रह गया। ब्रह्मचर्य और यहाँ···मामला गड़बड़ तो नहीं। परन्तु वापिस जाना भी मुश्किल था। नरेश बैठ गया। परन्तु जब मन को रस देने वाली ज्ञान-बरसात होने लगी तो नरेश जान गया कि ये साधारण महिलाएँ नहीं हैं, यह ज्ञान की देवियाँ हैं, पवित्रता की साक्षात् मूर्ति···!

अब तो नरेश का मन घर पर न लगता, वह इन्तजार करता कि कब शाम के ६.०० बजें और वह आश्रम की ओर भागे। उसने ७ दिन का कोर्स पूरा किया।

आश्चर्य—केवल ७ दिन में ही सारा ज्ञान मुझे दे दिया। कौन हैं ये, इतनी गुह्य बातें और इतने अल्पकाल में। नरेश ने दैनिक कक्षा में प्रवेश किया। उसे बताया गया कि यहाँ प्रातः ५.३० बजे आना होगा, उसने सहर्ष स्वीकार किया।

प्रातः ४.०० बजे ही अलार्म बजा, नरेश जगा—घण्टी बन्द कर दी, कहीं घर वाले न जग जाएँ! स्नान आदि से निवृत होकर नरेश ५.३० से पूर्व ही आश्रम पर पहुँच गया।

आज उसके जीवन के दिव्य अनुभवों का प्रथम दिन था। सारा दिन मन सूरजमुखी की तरह खिला रहा, मानो उसने भगवान को पा लिया हो। उसे बताया गया कि यह ज्ञान स्वयं ज्ञान-सागर परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा दिया है जो कि इस समय सृष्टि पर आकर आत्माओं को पावन बना रहे हैं। इसलिए अगर इस ईश्वरीय जीवन का आनन्द लेना हो तो ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य है।

नरेश को चाहिए ही क्या था। उसने ब्रह्मचर्य, खान-पान की शुद्धि आदि नियमों को सहर्ष ही अपना लिया। अश्लील पुस्तकों व सिनेमा से तो उसे पहले से ही नफरत थी।

अब नरेश का जीवन ईश्वरीय अनुभुतियों से सन्तृप्त होने लगा। रोज उसे नये-नये अनुभव होते थे। वह जब घूमने जाता था तो सभी नर-नारियों के मस्तक में चमकती हुई आत्मा देखने का अभ्यास किया करता था।

नरेश जब किसी नारी की सुन्दरता को देखता था तो उसे हँसी आती थी। सोचता था—ये शरीर भी क्या है···अगर ऊपर की खाल को उतार दिया जाए तो सुन्दर नारी को देखकर ही उल्टी आ जाए मानो अन्दर हाड-माँस को इकट्ठा करके ऊपर सुन्दर-सा लेप कर दिया हो।

शरीर में है भी क्या···गन्द ही गन्द···मानो किचड़े का डब्बा हो, अगर किसी बन्द किचड़े के डिब्बे को ऊपर से सुन्दर रंग कर दिया हो, तो भी उसकी ओर कौन आकर्षित होगा। इस शरीर रूपी किचड़े के डिब्बे में भी मानो ऊपर सुन्दर-सा रंग कर दिया हो और मनुष्य इसकी ओर आकर्षित होता है। वह सोचता था—एक दिन ये सुन्दर शरीर चिता पर रख दिया जाएगा और उसकी सब सुन्दरता आग की लपटों के साथ राख में रूपान्तरित हो जाएगी। आत्मा के निकलते ही शरीर का आकर्षण समाप्त हो जाता है। वास्तव में सुन्दर तो आत्मा ही है।

इस तरह के वैराग्य-युक्त विचार नरेश की पवित्रता को दृढ़ करते जाते थे। धीरे-धीरे उसकी स्थिति श्रेष्ठ होने लगी। योग के लिए वह रोज एकान्त में जाया करता था। कई वर्षों तक यही क्रम चलता रहा। नरेश के मन में बड़ी सन्तुष्टि थी। मन सदा उमंग में रहता था। इसलिए सेवा के लिए भी उसका मन सदा ललायित व उत्साहित रहता था। मन के अपवित्र द्वन्द्व ही तो उमंग को धराशाही करते हैं।

परन्तु आत्माएँ जन्म-जन्मान्तर विकारों की छाया के कारण दूषित हो चुकी हैं और फिर दूषित विश्व का दूषित वातावरण भी तो कुछ है ही।

एक दिन नरेश जब एकान्त में बैठा था, उसने एक स्त्री-पुरुष को देखा जो बहुत खुश नज़र आ रहे थे और दाम्पत्य जीवन का सुख भोग रहे थे। नरेश के विचार चलने लगे—ये जीवन भी अच्छा है···

अपने दुःख को एक-दूसरे में बाँट लेते होंगे। निराशाओं को एक-दूसरे को बताकर खुशी में जीवन बिताते होंगे···सचमुच यह भी जीवन अच्छा है।

क्यों न मैं भी शादी कर लूँ···जीवन भर पवित्र तो रहूँगा ही—परन्तु जीवन में साथ देने वाला, मन बहलाने वाला तो मिल जाएगा। वह यह भूल गया कि यह प्यार बहुत काल नहीं चलता। आज प्यार है, कल मन-मुटाव। एक से दो होने पर दुःख बँटेगा नहीं, बढ़ेगा। दुःख हरने वाला तो तुम्हारा साथी भगवान है। दुःखी मनुष्य दूसरे का क्या दुःख हरेगा।

थोड़ी ही देर में नरेश को एक झटका-सा लगा। उसे शिव बाबा की याद आई। उसे स्वयं की मूर्खता पर हँसी आ गई। नरेश···तू भी मूर्ख है। न जाने क्या-क्या सोचता रहता है। जिस जंजाल से तू ईश्वर-कृपा से छूटा है, तू फिर उसी में पड़ना चाहता है··· हट धूर्त।

नरेश के सामने उसके एक साथी की छवि आ गई, जिसने भी ब्रह्मचर्य को अपनाया था, परन्तु कुसंग में आकर उसने शादी कर ली थी लेकिन जो अब अपने दाम्पत्य जीवन से बेहद परेशान है। रोता है—कि कुमार थे तो जीवन का सच्चा सुख ले रहे थे, अब तो किस्मत में दुःख ही दुःख है। पहले केवल स्वयं की ही चिन्ता थी, अब दो की चिन्ता है और फिर समाज की दृष्टि से भी गिर गये। लोग हँसते हैं, भविष्य भी अन्धकारमय हो गया है। शिव बाबा का जीवन में बहुत प्यार पाया था, परन्तु एक विनाशी साथी का प्यार पाने के लिए ईश्वरीय प्यार—जैसी अमूल्य निधि से हाथ धोना पड़ा। भगवान की सदा ही प्यार भरी दृष्टि मिली थी, अब धर्मराज की कटु दृष्टि देखनी पड़ेगी। ओह! मैं दुर्भागा···।

नरेश के मन के उमंग ने पुनः पलटा खाया। नहीं-नहीं, जो व्रत लिया है, उसे आजीवन निभाऊँगा। 'प्राण जाएँ, पर वचन न जाहीं'। लोग अपनी प्रतिज्ञाओं को पालन करने के लिए क्या-क्या सहन करते हैं—मुझे तो भगवान मिला है—।

नरेश योग-प्रेमी तो था ही, उसे माया का भी सम्पूर्ण ज्ञान हो चुका था। वह अब माया से घबराता नहीं था। मायावी तूफान आते थे, परन्तु वह यह नहीं सोचता था कि ये क्यों आ रहे हैं। सोचता था—मैंने ही तो इन्हें चुनौती दी है कि तुम आओ परन्तु मेरा पैर भी नहीं हिला सकोगी।

न जाने कैसी हवा थी। एक दिन नरेश जब अकेला ही बैठा था, उसके मन में फिर संकल्पों-विकल्पों का तूफान उमड़ने लगा। उसने स्वयं को बहुत समझाया। नरेश···तू यों ही सोचता है···तू उस पुराने रास्ते पर जा भी नहीं सकता···अगर चला भी गया तो ईश्वरीय अनुभूतियों की यादें तुम्हें चैन नहीं लेने देंगी, तुम्हारी शान्ति भंग हो जायगी और तुम्हें भी विकारी गृहस्थियों की तरह सुख की खोज में भटकना पड़ेगा। विकारों की अग्नि में तो सभी जल रहे हैं, अगर तूने भी वही काम किया तो यह कोई बहादुरी नहीं है। तूम तो महाबीर हो···तुम्हें तो सारे विश्व को पवित्रता का पाठ पढ़ाना है।

परन्तु नरेश के मन का प्रवाह न रुका···

नरेश उस स्थान से उठा और दूसरे एक सुन्दर-से हरियाली-सम्पन्न बगीचे में चला गया। स्थान बदलते ही मन बदल गया—नरेश के विचार आसमान को छूने लगे—।

ईश्वरीय आवाजें नरेश के मन को छूनें लगीं—

नरेश, तुम तो सारी दुनिया के व्यर्थ संकल्प समाप्त करने वाले हो। तुम्हारी पावन वृत्ति से समस्त तत्व, प्रकृति व दूषित वायुमण्डल पावन होना है—तुम्हारा एक-एक संकल्प बहुत कीमती है, उसे यों हो बहाने से कोई लाभ नहीं।

तुम्हें तो शिव बाबा का साक्षात्कार सभी को कराना है—तुम दैहिक आनन्द चाहते हो, उसमें कुछ भी सार नहीं है—

नरेश, प्रकृति तुम्हारा इन्तजार कर रही है कि कब मेरे पावन देव मेरी सेवाएँ स्वीकार करें—और तुम—प्रकृति के गुलाम बनना चाहते हो—

देखो, अनेक आत्माएँ तुम्हारे आधार पर जीती

हैं। अनेक भक्त तुम्हारे दर्शन की इन्तजार कर रहे हैं, और तुम—गुड़ियों के खेल में मस्त हो—

नरेश, तुम वो सोचते हो, जो तुम्हें करना नहीं है। जब परिणाम घोषित होंगे, याद करो उस दिन को। तुम पछताओगे—तुम्हारी उन्नति का जो मूल है—पवित्रता, उसमें सम्पूर्ण परिपक्वता धारण कर लो—सबसे अधिक आनन्द पवित्रता में है।

इन श्रेष्ठ विचारों से नरेश का आत्म-बल बहुत ही बढ़ चुका था। उसके जीवन में दृढ़ता आ गई थी। अब उसका पुरुषार्थ और भी तीव्र हो चुका था। कुछ दिन उसके सुखद सपनों में बीत गये।

स्वप्न मनुष्य की स्थिति के दर्पण हैं। दिन में तो मनुष्य ज्ञान-बल से अपने विचारों पर नियन्त्रण रखता है, परन्तु रात को वे पुनः अपनी बास्तविक स्थिति का प्रतिबिम्ब छोड़ते हैं। सम्पूर्ण पवित्र बनना एक-दो दिन का खेल नहीं है। मन का प्रवाह कभी-कभी दूसरों के विचारों के अधीन होकर भी चलता था।

नरेश एक दिन रात्रि को यों ही घूम फिर कर सो गया। स्वप्न में उसके सामने एक बहन आ गई जिसने अपने जीवन की परेशानी व मन की अशान्ति की बात नरेश को कही। नरेश के मन में रहम आ गया। सोचा—क्यों न हम दोनों साथ रहें ताकि उसका अशान्त जीवन भी सुखी बन जाए। फिर दोनों पवित्र रहेंगे और सन्यासियों के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करेंगे।

जैसे ही नरेश की आँखें खुली, मन उदास था, उस बहन की छवि आँखों से ओझल नहीं हो रही थी। परन्तु नरेश को याद आया, उसने फौरन अव्यक्त महावाक्यों का अध्ययन किया—फिर—

फिर उसने उस बहन को अप्रत्यक्ष रूप में प्रकट करके उससे बात की। सुनीता, तुम मेरी बहन हो। बहन-भाई आपस में शादी कैसे कर सकते हैं। तुम तो देवी हो, तुम्हारे मन में यह दूषित विचार कैसे आया। तुम्हारी जड़ मूर्ति के दर्शन-मात्र से पापियों के मन निर्मल हो जाते हैं—तुम्हें तो अपनी दृष्टि से असुरों का संहार करना है—अपनी पावन दृष्टि से मनुष्यात्माओं को निहाल करना है।

बस, उसकी उदासी लोप हो गई। उसे लगा कि आज दूसरी आत्मा के व्यर्थ संकल्पों का प्रभाव मुझ पर आ गया। इस लिए मुझे शक्तिशाली योग-युक्त स्थिति में सोना चाहिए ताकि किसी का प्रभाव मुझ पर न आये। अगर मैं योग-युक्त स्थिति में सोऊँगा तो शक्तिशाली बायुमण्डल, मेरे चारों ओर मेरे रक्षक के रूप में कार्य करेगा और कोई भी दुश्मन समीप नहीं आ सकेगा।

नरेश ने महसूस किया कि उसने सुनीता बहन से सूक्ष्म में जो रूह-रुहान की, उससे उसके भी संकल्प शान्त हो गये।

अब तो नरेश ने बाबा से रूह-रूहान शुरू की।

बाबा, मेरी पवित्रता की स्थिति अच्छी है, सोचता हूँ कभी भी व्यर्थ संकल्प मेरे मन में न आये। फिर ये तूफान मेरे मन में क्यों आते हैं?

बाबा बोले—घबराओ नहीं, ये तुमसे अन्तिम विदाई लेने आते हैं। इन पर विजय प्राप्त कर महा-वीर बनो और अनुभवी बनो।

नरेश ने कहा—ऐसी कोई राज़-युक्त बात बताइये, बाबा जो मैं सदा के लिए इन तूफानों से मुक्त हो जाऊँ। मन सदा आपकी शीतल छत्र-छाया का अनुभव करे।

बाबा ने कहा—इसके लिए एकाग्रता का अभ्यास करो। इससे माया तुम्हें दूर से ही नमस्कार करेगी।

नरेश ने पूछा—एकाग्रता की सरल विधि क्या है? मन सहज हो टिकता नहीं।

बाबा ने समझाया—रोज अमृत वेले स्वयं को अमृत से भरपूर कर दो। भरपूर मन ही एकाग्र हो सकता है। सन्तुष्ट होकर रहो, मानो सब-कुछ पा लिया है, फिर मन कहीं भी भागेगा नहीं।

बस उस दिन से नरेश ने प्रतिदिन विशेष रूप से एकाग्रता का अभ्यास किया। उस के व्यर्थ संकल्प न जाने कहाँ चले गये और वह अपने लक्ष्य—'सम्पूर्णता'—की ओर तेजी से बढ़ने लगा। ●

"स्मृति और विस्मृति"

ले०—ब्रह्माकुमार चन्द्र प्रकाश, मऊ

(एक)

स्मृति में "बाबा" जब आये,
नव विश्व सृजन की आस जगी
जीवन को नव पथ दीप मिला
पावनता आँखों में आन बसी।
जब पावनता जीवन में बसती
जीवन पावनता में बसता
पावनता में संकल्प बसे
तब संकल्पों में बसती निर्मलता
निर्मलता से निर्भयता पा अब
जीवन को हमने जान लिया
स्मृति के जब जब दीप सजे
पावनता का वरदान लिया।

(दो)

ये भटक रहा यों विश्व अरे !
कितना बोझिल कितना कलुषित
साये में दानव के, मानव
लगता देखो कितना, अनुचित !
भय, आत्म ग्लानी, उत्पीड़न अब
इसके बिल्कुल साथ हो रहे
सुख साज सजाये ढेरों से
सब दानवता के ग्रास हो रहे।
आत्म-विस्मृति से इस जग का
देह-भान से साथ हो गया
"प्रेम-शून्य" मानव-जीवन यह
विकृत मन अभिशाप हो गया !

(तीन)

परमधाम का वास छोड़कर
"शिव" हमको समझाने आया
ज्योति जगा ज्ञानी आत्मा की
जगमग दीप जगाने आया !
ज्ञान-रश्मि से जीवन-पथ यह
स्नेह-पूर्ण अविराम हो गया
आत्म-स्मृति पा ज्ञान-सिन्धु से
ज्योति-बिन्दु का साथ हो गया !
स्मृति-विस्मृति का खेल बना
स्मृति से जग जीता जाये है
विस्मृति से बन्धन में घिरे
स्मृति ही मुक्त बनाये है !

(चार)

पावन स्मृति से जीवन के
पावन मूल्यों को जाने
"शिव" परम पिता परमात्मा हैं
इस अमर सत्य को पहिचाने !
"शिव" की स्मृति से जीवन को
बन्धन-मुक्त बनायें हम
आत्म-भान से, कलुषित मन को
पावन-पुनीत बनायें हम
भटके चाहे विश्व किधर भी
कितना ही, विस्मृत बन वीरान बने
किन्तु इसी पावन स्मृति से
नई सुबह-ओ-शाम बने !

अनुभव

क्या से क्या हो गया...

ब्र० कु० सुरेन्द्र, नीमच (मध्य प्रदेश)

लौकिक से अलौकिक...कब हो गया ? कैसे हो गया ? जैसे कुछ पता ही नहीं चला क्योंकि कभी सपने में भी ये ख्याल नहीं उभरा था कि मैं भी सुधर सकता हूँ, मैं भी इतना ऊँचा उठ सकता हूँ ! और वो भी परमात्मा, जिसको कि कभी मैं मानता ही नहीं था और जिसके मंदिरों में तो इस जन्म में शायद भूल से भी नहीं गया होऊंगा (शायद मेरी भक्ति पिछले जन्म में ही पूरी हो गयी थी) वो ही परमात्मा खुद आकर के मुझे गले लगा लेगा, अपना बना लेगा और प्यार से कहेगा "मेरे मीठे-मीठे बच्चे, मैं तुम्हें लेने आया हूँ..." सच ! कभी सोचा तक भी नहीं था कि ऐसा भी हो सकता है ! मगर हुआ, मेरे खुद के साथ हुआ (वाह ड्रामा वाह !) एक पतित और विकारी आत्मा पवित्रता की निर्विकारी राह पर कब अग्रसर हो गयी, कुछ पता ही नहीं चला। एक वो भी राहें थी, जिन पर अज्ञानता का घोर अंधकार छाया था, इतना घना अंधकार कि खुद अपने-आपको भी पहचान पाना मुश्किल ही क्या, असंभव था। दूर...दूर...तक कहीं रोशनी की झलक तक भी आखों में नहीं पड़ती थी और एक राह यह है कि जिस पर जितना आगे को बढ़ता जाता हूँ उतनी ही रोशनी बढ़ती जाती है। चारों ओर इस राह के ज्ञान के शीतल वृक्ष लहलहा रहे हैं जो इस राह के मुसाफिरों की थकान को समेट कर नयी ताज़गी और शीतलता प्रदान करते रहते हैं और ज्ञान सूर्य की कोमल और रेशमी किरणें इस राह के मुसाफिरों का पथ-प्रदर्शन करती हुई उस सुनहरी मंज़िल की ओर, जिसकी कि राह के वो राहगीर बने हैं...आकर्षण के धागों में बांध कर, खींचती-सी लिये चले जा रही हैं (वाह नज़ारा, वाह !) और उन्हीं राहगीरों के झुन्ड में मैं भी बढ़ा चला जा रहा हूँ...चला क्या जा रहा हूँ मानो उड़ता जा रहा हूँ...हवा में तैर रहा हूँ और मेरे साथ वो सब परिवार जन भी हैं जो कि मुझसे ५००० वर्षों से बिछुड़ चुके थे। आज मेरा वो अलौकिक परिवार फिर मेरे साथ है और बाप के हाथों में फिर मेरा हाथ है...क्या इतना खुशनसीब और भी कोई हो सकता है ? (वाह तकदीर, वाह !)

अगर कोई मुझसे कहे कि सुरेन्द्र भाई, अपना ज्ञान में आने के बाद का अनुभव सुनाओ...तो क्या डिक्शनरो में ऐसे कोई शब्द हैं जो मेरे अनुभव की अनुभूति सुनने वाले को करवा सकें ? नहीं, शायद नहीं मिलेंगे और अगर मिल भी जायें तो शायद मैं बोल न पाऊं, क्योंकि मेरे बोलने से पहले ही मेरा दिल भाव-विभोर हो उठेगा, आँखों से प्रेम के आँसू टपक पड़ेंगे और यही आँसू शायद मेरे अनुभव की अनुभूति कराने में सक्षम हो सकते हैं और रही बोल की बात तो बस यही बोल मुख से फूटते हैं कि मैं क्या था, क्या हूँ, और क्या होऊंगा...अचानक ये क्या से क्या हो गया...।

(आध्यात्मिकता का महत्त्व पृष्ट ४० का शेष)

वाली अजर, अमर आत्माओं को जो अब वानर सम विकारी बन गई हैं, पुनः पूर्व जन्मों की कहानी सुना कर वज्र के समान आत्मा को (बजरंगबली) बलवान बना रहे हैं। यही वह आध्यात्मिक ज्ञान है जिसे समझ कर हम आत्माएँ देह में रहते हुए भी जनक के समान विदेही कहे जा सकते हैं। गुप्त वेष में आने वाले परमपिता परमात्मा के गुप्त ज्ञान को समझने वाले हम ही गुप्त बच्चे सच्चे-सच्चे गोप-गोपियाँ हैं जो उससे मिलन मना कर अतीन्दिय सुख में नाचते रहते हैं। इसी ईश्वरीय ज्ञान के आधार से ही हम दुःख-दर्द भरे संसार रूपी सागर को पार कर सकते हैं तथा विनाशी देह और देह के सम्बन्धों व देह के धर्मों को भूल कर ही नष्टोमोहः बन सकते हैं। अतः यह वही सुन्दर सुहावनी कल्याणकारी वेला है जबकि इस ईश्वरीय आध्यात्मिक ज्ञान यज्ञ में अपना (तन, मन, धन) सर्वस्व स्वाहा कर सदा के लिए सच्चे सुख व शान्ति का अधिकार परमपिता परमात्मा से प्राप्त कर सकते हैं।

ज्ञान-चर्चा

ब्र० कु० उर्मिल, पालम दिल्ली

एक बार की बात है कि (Jurists and Spiritualists meet) के दौरान (Survey) के लिए तैयार किए गए (Questionare) के द्वारा हमें कुछ शिक्षावादी व्यक्तियों से व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ।

एक दिन अचानक ही हम बहन (survey) के प्रोग्राम को (Conduct) करते हुए (Mathematics Dept.) में जा पहुँचे। जहाँ पर हमारी एक (Operational Research) के लैक्चरार से मुलाकात हुई। हमने स्नेह से पहले उन्हें बताया कि हम ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के नियमित विद्यार्थी हैं और अभी हमारा एक सम्मेलन होने वाला है, उसके लिए हम आपको निमन्त्रण देना चाहते हैं।

इस विद्यालय का नाम सुनते ही, उनके मन में पहले से विद्यालय के बारे में हुए गलत विचार चेहरे पर उभर आए और हमारे सामने प्रश्नों की एक क्यू सी लगा दी जो प्रश्न उन्होंने हमसे किए वह आपके सामने प्रस्तुत हैं।

प्रश्न १—आप इस विद्यालय की विद्यार्थी होने के नाते कुछ और कार्य भी करती हैं ?

उत्तर—(छोटी बहन की तरफ ईशारा करते हुए) ये तो अभी B. A. (F) में पढ़ रही हैं और हम अपनी M. Sc. (Phy) की शिक्षा पूरी करने के पश्चात् अभी आफिस में सर्विस भी करती हैं और जो शेष समय हमारे पास होता है उसे हम ईश्वरीय सेवा के कार्य में लगाती हैं।

प्रश्न २—(चौंकते हुए) साईंस में भी M.sc.(Phy) की पढ़ाई करने के पश्चात् आपने इस विद्यालय को क्यों Join किया ?

उत्तर—(अपने कोर्स के साथ ही प्रश्न को लिंक करते हुए)—यह तो आप जानते ही हैं कि साईंस में विशेष रूप से (Physics, elements) की (study) है। जो केवल जड़ तत्त्व है और मानव की तरह सोचने विचारने, समझने की शक्ति इनको प्राप्त नहीं है। (Metaphysics) विशेष रूप से चेतन सेवाएँ अर्थात् आत्मा और परमात्मा के विषय में विस्तारपूर्वक पढ़ाई है। मेरे विचार से दोनों किस्म की पढ़ाई एक दूसरे की पूरक है (Study of Physics and Metaphysics are Complementry of each other) इसलिए मेरे विचार से तो अच्छा है यदि दोनों पढ़ाई का पूरा ज्ञान हो जाए।

प्रश्न ३—(शाँत स्वभाव से)—क्या आपको इस कार्य के लिए (Financial aid) भी प्राप्त होती है ?

उत्तर—यह भी कह सकते हैं कि मिलता है और नहीं भी मिलता कह सकते हैं। क्योंकि हम अपने पिता परमात्मा का परिचय सभा आत्माओं का अर्थात् अपने भाई-बहनों का देते हैं। यदि आपका बच्चा आपका परिचय किसी को दे तो क्या आप उस, इस कर्त्तव्य को करने का पैसा देंगे, अवश्य ही नहीं। पर हम ऐसा भी कह सकते हैं कि मिलता भी है—क्योंकि ईश्वरीय संदेश देने से सर्वश्रेष्ठ खज़ाना खुशी प्राप्त होती है और भविष्य २१ जन्मों के लिए सुख और शाँति की भी प्राप्ति होती है तो हम समझते हैं कि यह कहना ज्यादा उचित होगा कि हमें धन पैसे के रूप में नहीं, पर दूसरे रूप में मिलता है।

प्रश्न ४—आपके विद्यालय में किस प्रकार की शिक्षा दी जाती है ?

उत्तर—किसी भी प्रकार की परिस्थिति हमारे

सामने हो और हमारी मानसिक स्थिति तनावपूर्ण न बने उसके ऊपर हमारे विद्यालय में स्वतः ही ईश्वर के द्वारा ज्ञान दिया जाता है। जिसमें हमारे ४ मुख्य सब्जेक्टस ज्ञान, योग, धारणा और सर्विस के होते हैं।

प्रश्न ५—मान लो, आप अपना पेपर देने के लिए जा रही हैं और आपका कोर्स पूरा नहीं हुआ तो क्या आप ऐसा समझती हैं कि आप उस समय तनाव रहित स्थिति में रह सकेंगी ?

उत्तर—हाँ यह बिल्कुल सम्भव और छोटी सी बात है। पहले तो अगर कोर्स पूरा नहीं हुआ है तो उसकी चिंता करने से कोर्स पूरा नहीं हो जाएगा।

दूसरी बात—यदि हमने पूरे दिल से मेहनत की है और समयाभाव के कारण यदि कोर्स अधूरा रहा है तो इस बात को अपने पिता परमात्मा को बतला देते हैं, और उस पर इस बात को छोड़कर हल्के हो जाते हैं तो अभी तक देखने में ऐसा आया है कि या तो उस कोर्स में से प्रश्न ही नहीं आता और यदि आता है तो उसके साथ (Choice) होती है।

प्रश्न ६—क्या ऐसी स्थिति का आप अपना कोई उदाहरण दे सकती हैं ?

उत्तर—अवश्य। अपनी B. Sc. (F) की परीक्षा के दौरान हुई घटना का ब्योरा सुनाया।

इतना सुनने के पश्चात् हम देख रहे थे कि उनको खुशी भी हो रही थी और आश्चर्य भी। पर फिर भी अधिक जानकारी करने के लिए कुछेक प्रश्न और किए।

प्रश्न ७—(ऊपर के प्रश्न से लिंक करते हुए)क्या सब मालूम होने के पश्चात् उस विषय में आपके मन में डर नहीं बना रहता ?

उत्तर—डरने की तो हमारे लिए बात ही नहीं क्योंकि परमात्मा कल्याणकारी है अतः वह जो निर्देश हमें देते हैं, हमारे कल्याण के लिए ही देते हैं और साथ-साथ परमात्मा पिता ने हमें ऐसा योग सिखाया है जिससे हम आत्मा शरीर में होते हुए अपने शरीर से न्यारे होने का अभ्यास करती हैं जिसके फलस्वरूप हमें विशेष आत्मिक बल प्राप्त होता है और भय का रूप, निर्भय स्वरूप में बदल जाता है।

प्रश्न ८—क्या आप साईंस का विद्यार्थी होते हुए भी आत्मा के अस्तित्व में विश्वास रखती हैं ?

उत्तर—(आश्चर्य से) क्यों नहीं—क्या हम यह आप से जान सकती हैं कि आप अभी जो हमसे वर्तालाप कर रहे हैं—यह कौन कर रहा है ?

(घबराये स्वर में)—मैं बोल रहा हूँ।

ये मैं कहने वाले आप कौन हैं—हमने पूछा—

हँसते स्वर में जवाब मिला—कि मैं एक चेतना, तो अति शीघ्रता से हमने जवाब दिया कि बस यही चेतना शक्ति आध्यात्मिक भाषा में आत्मा कहलाती है। जब आत्मा शरीर में है तो हम बोलने, सुनने, सोचने, समझने का कार्य करते हैं और जब आत्मा शरीर से निकल जाती है तो यह शरीर मृत घोषित कर दिया जाता है। इस प्रकार आत्मा एक शरीर छोड़ कर दूसरा ले लेती है।

प्रश्न ९—(बात काटते हुए) इसका मतलब यह हुआ कि आत्मा पुर्नजन्म लेती है ?

उत्तर—हाँ, अवश्य ! तभी तो हमें पुनर्जन्म के विषय में कई बार अखबार में पढ़ने का अवसर प्राप्त होता है।

प्रश्न १०—मैं तो बिल्कुल ही पुनर्जन्म में विश्वास नहीं रखता—मेरे विचार से तो क्या पता, ऐसी कोई संस्था हो जहाँ पर कुछ इस प्रकार की बातें लोगों को सिखाई जाती हों जो अभी तक देखने में सत्य प्रतीत हों, यदि मैं आपके आश्रम पर आऊँ और आप मुझे इस प्रकार से पुनर्जन्म के बारे में बतायें तो यह एक नई बात तो मेरे मन को तनाव पूर्ण बना देगी।

उत्तर—वैसे तो ऐसा होता ही नहीं है क्योंकि इस प्रकार से यदि कोई गलत प्रचार फैलाने वाली संस्था होती तो अवश्य ही उस संस्था के बारे में लोगों को पता चल चुका होता, पर फिर भी यदि आपकी

बुद्धि इस बात को स्वीकार नहीं करती तो हम आप को एक छोटा सा उपाय बताते हैं।

यह जो संकल्प अभी आपके मन में है, यह संकल्प आप उस पिता को अच्छी रीति जानकर बता दो। जिससे आपकी स्थिति हल्की हो जाएगी और कुछ समय के पश्चात् आप देखेंगे कि इस प्रकार पुनर्जन्म के बारे में बताने वाला व्यक्ति आपके परिवार में ही कोई होगा या नजदीक में। अगर ऐसा नहीं भी हुआ तो कुछ समय के पश्चात् स्वतः ही आपका मन पुनर्जन्म में विश्वास करने लग पड़ेगा।

प्रश्न ११—अन्त में मैं यह और जानना चाहता हूँ कि आपके आश्रम पर बहन-भाई बनाया जाता है यह कहाँ तक सत्य है ?

उत्तर—यदि इस प्रकार बहन-भाई बनाने से सभी पवित्रता पालन करने लग पड़ते तो फिर क्यों आज ऐसे समाचार हमको सुनने के लिए मिलते कि भाई की बहन के प्रति दृष्टि खराब हुई। वास्तव में तो हमें यहाँ पर पवित्रता के जीवन में महत्व के ऊपर स्वतः ही परमात्मा का दिया गया ज्ञान दिया जाता है, जिसको सुनकर यदि स्वतः ही व्यक्ति के मन में भाई-भाई की भावना जागृत हो जाए तो इसमें हमारा क्या दोष है ?

एक व्यक्ति को जब चारित्रिक पतन का मूल कारण संस्कारों में अपवित्रता, मालूम पड़ जाती है तो स्वतः ही उसके संस्कारों में सबके प्रति प्यार की भावना जागृत होती है। वह सबको भाई-बहन की दृष्टि से देखने लगता है और नाम हमारा हो जाता कि ब्रह्माकुमारियों ने इनको भाई-बहन बना दिया —वास्तविकता यदि देखी जाए तो हम उनको भाई-बहिन बनाने के मामले में बिलकुल निर्दोष है—

यह सब सुन लैक्चरार साहब ने अपने प्रश्नों की क्यू को समाप्त किया। और अति प्रसन्नता से आश्रम पर आने का वचन दिया।

(कविता)

"हम बढ़े चलेंगे"

(योगीराज, मधुबन, आबू)

हम बढ़े चलेंगे, निर्भय हो,
जग के अन्धियार मिटायेंगे
काँटे जो आयेंगे पथ में
चुन-चुन कर उन्हें जलायेंगे।
जो रोकेगा राहें आकर
देंगे हम ज्ञान उसे अपना
बन जायेगा वो भी साथी
पूरा करने शिव का सपना।
वो कलम लगाये फूलों की
हम अमृत जल से सींचेंगे,
वो फूल खिलाये जँगल में
हम काँटों को फूल बनायेंगे।
जो शत्रु बनकर आयेगा
उसे शिव का मीत बना देंगे,
बन जायेगा वो विश्व सखा,
उसे मानव प्रीत सिखा देंगे।
हम जग में जाकर वैर भाव की,
आँधी को ललकारेंगे,
देकर के आत्म-ज्ञान उन्हें
हम प्रेम की धार बहायेंगे।
अपमान करेगा जो आकर
हम उस पर फूल चढ़ायेंगे,
उनके मन के विष को पीकर
अमृत का कलश पिलायेंगे।
हर पापी नर को अपना कर
पापों की होली जलायेंगे
जग में फैली नर हिंसा को
हम कुचल-कुचल कर आयेंगे।

सत्य घटना—

क्या यह चमत्कार नहीं है

लेखक—ब्रह्माकुमार राजेन्द्रकुमार, जबलपुर

घटना शत-प्रतिशत सही है कि संस्कार धरनी जबलपुर सेवा केन्द्र में संचालिका बहिन द्वारा १८ जनवरी १९८० "अव्यक्ता-दिवस" की सूचना दी जाती रही कि प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की सौग़ात मिलेगी, वह क्या होगी ? इस संदर्भ में ही एक दिन पूर्व की घटना यह है कि नित्य की भाँति मैं सायंकाल सेवा केन्द्र की ओर जा रहा था। कुछ दूर चला ही था कि मुझे भारी तीव्र ज्वर का प्रकोप होता-सा प्रतीत हुआ। साथ ही ऐसी सर्दी लगी कि उल्टे पैर सेवा-केन्द्र की ओर से पीछे ही घर वापिस हो जाना पड़ा, जहाँ पहुँचते ही मैं बेसुध अवस्था में पड़ गया, रजाईयों पर रज़ाईयाँ व ऊनी कम्बल मेरे ऊपर डाल दिये गये। मेरी ज़बान पर सिर्फ ओम-शान्ति, ओम-शान्ति, शिव-बाबा, शिव-बाबा ही का उच्चारण आ रहा था। दूसरी ओर शरीर से पसीना भीतर-ही-भीतर झिर रहा था, देखने वाले पारिवारिक जन-चिन्तित हो रहे थे कि कैसे और किस रूप में अचानक अस्व-स्थता आ गई, वे दौड़-धूप कर रहे थे। मैं तीव्र ज्वर से कराहने की अपेक्षा "शिव बाबा" का ही स्मरण कर रहा था, साथ-साथ घबराहट भी हो रही थी। मन में अनेक प्रश्न उठ रहे थे कि बाबा यह कैसी परीक्षा ले रहे हैं ? जा रहा था इन्द्र सभा में आपके पास लौट आया बिस्तर पर ? बीच-बीच में अपनी दैनिक ईश्व-रीय ज्ञान की कक्षा का ध्यान बार-बार मानस पटल पर उभर रहा था। क्या "अव्यक्त-दिवस" के अमृत-बेले से आयोजित साँध्यकालीन तक के कार्यक्रम में भाग नहीं ले सकूंगा ? कैसा विचित्र खेल है ? इन सभी बातों का तूफान-सा घिर रहा था कि तीव्र ज़्वर के साथ नींद आ गई : देखता हूँ कि जैसे भयँकर रूप से गहराई लिये हुये काले श्वेत रंग से छाया हुआ बादल चारों ओर उमड़-घुमड़ कर रहा है, चन्द सैकेंड बाद खुले आकाश की घटा से एक चमकदार रोशनी-सी क्षितिज की तरफ दिखाई दे रही थी। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे—सुखद आनन्द की अनुभूति हो रही हो। आवाज़ आई—"नहीं बच्चे, शारीरिक व्याधि अपनी जगह, तू इन्द्रसभा में जायेगा निश्चय ही, तू बाबा की वाणी सुनेगा।" मैंने कहा—"सच पर बाबा, देखो तो, कैसा ज्वर जो कभी भी नहीं हुआ परन्तु आज ही कल "अव्यक्त-दिवस" के पूर्व मुझे इसने ग्रसित कर लिया। मैं तो अत्यन्त कम-ज़ोर हो चुका हूँ।" मध्यरात्रि के पश्चात् घबराहट में मेरी आँख खुली तो देखा कि मैं पसीने से लथपथ था, सिर में भारीपन था, घड़ी ने २-३० का घंटा बजाया। वह था अमृत-बेला। मैंने किसी तरह सूखे कपड़े से शरीर से पसीना पौंछा, चादर ओढ़कर घर में लगे "ज्योति बिन्दु" के चित्र के समक्ष समर्पण कर कहा वाह बाबा, क्या चमत्कार है ? यह मेरा सौभाग्य ही है। अब तो प्रातः अव्यक्त दिवस की प्रातः बेला में भी आयोजित ईश्वरीय कक्षा में पहुँच सकूंगा चाहे जैसी भी स्थिति में रहूँ। यह भी मेरा दृढ़ संकल्प है।

चन्द घंटे बाद ही ५ बजे मैं पुनः उठा, मेरे परिवार-जन घबराए हुए कह रहे थे कि कहां चले ! रात्रि में तो तीव्र ज्वर था, अब कहीं हवा या शीतांश बैठ गया तो निमोनिया हो जायेगा, बाहर मत जाओ। मैंने कहा चिन्ता मत करो, मेरे कार्य को मत रोको, मुझे कुछ नहीं होगा। अपने दृढ़ संकल्प के अनुसार मुझे बाबा की कक्षा (इन्द्रसभा) में जाना है सो जा रहा हूँ। मैं तैय्यार होकर सेवा केन्द्र पहुँच ही गया जहां हमारे सभी भाई-बहिन पहुँच रहे थे। मैंने भी पहुँचकर वहाँ स्थान ग्रहण कर लिया। मुझे इस आशातीत सफ़लता पर जो बाबा की अनुभूति हुई वह कैसे लिखूं यह मन की भावना ही जान सकती है।

पवित्र बनो–राजयोगी बनो

लेखक : ब्रह्माकुमार रामबचन, तिनसुखिया

प परमपिता परमात्मा 'शिव' है जिनका नाम।
परमधाम के रहवासी हैं, ऊँचा उनका काम॥

वि विश्व परिवर्तन करने आते ब्रह्मा तन आधार।
विश्व में ज्ञान प्रकाश फैलाते मिटता अज्ञान अन्धकार॥

त्र त्राहि-त्राहि मचा दी इन (रावण) पंच विकारों ने।
तृष्णा मन से मिट रही अब मनमनाभव के नारों से॥

ब बनाते श्रेष्ठ पावन आत्मा, राजयोग व गीता-ज्ञान से।
बन जाती स्वर्ग यह दुनिया, शिव बाबा के फरमान से॥

नो नौकर बने रहे थे अब तक हम उन भ्रष्ट संस्कारों के।
नौ रत्नों की माला बनती अब पुनः श्रेष्ठ विचारों से॥

रा रास्ता भूल कर रहे भटकते हम सारे संसार में।
राह दिखाई पिता ने आकर खो गए हम उसके प्यार में॥

ज जन्म-जन्मान्तर से ही भूली आत्मा स्वयं के स्वमान को।
जब स्वमान को जाना तो मिटाया देहाभिमान को॥

यो योग्य बनो पुरुषार्थ करो, ब्रह्मा सम कर्त्तव्य करो।
योजनाएँ बनाओ नई-नई सेवा दृढ़ संकल्प करो॥

गी गीता-ज्ञान सुना रहे हैं परमात्मा शिव इस संगम में।
गीता का युग चल रहा है भाग्य जगालो इस जन्म में॥

ब बदलो अपने जीवन को, अवगुण को मिटाओ तुम।
बनकर पावन घर चलना है, दिव्य गुणों से सज जाओ तुम॥

नो नौधा भक्ति छोड़ के अब ज्ञानी तू आत्मा बनो।
नोच डालो अज्ञान के पर्दे को पवित्र बनो, योगी बनो॥

पुरुषार्थ

(ले० ब्रह्माकुमारी उमा)

मानव-जगत में पुरुषार्थ एक ऐसा प्रकाश-स्तम्भ है, जिसमें मानव-जीवन की शक्ति—एकाग्रता, दृढ़ता, साहस और संकल्प जगमगा जाते हैं ? पुरुषार्थ की गंगोत्री से साहस की वह गंगा प्रस्फुटित होती है जो आगे चलकर दृढ़ता की जमनोत्री और एकाग्रता की सरस्वती से मिलकर जीवन की त्रिवेणी के रूप में परिणित हो जाती है। और वहाँ से अपने पुरुषार्थ रूपी मार्ग को प्रशस्त करती हुई, अपनी मंजिल को प्राप्त करती है। इतिहास भी इस बात का साक्षी है। जो भी कर्मवीर अपने पुरुषार्थ व दृढ़ता से अपने कार्य क्षेत्र में आगे बढ़े, उनके मार्ग से विपत्ति अपने-आप हटती चली गई।

जो अपने जीवन में सफलता की ऊँची चोटी पर ध्वज फहराना चाहते हैं, उनके मिटे पुरुषार्थ 'दिव्य प्रकाश-स्तम्भ' और एकाग्रता सच्चे जीवन के 'सम्बल' का कार्य करता है। एकाग्रता में शक्ति है और शक्ति ही उन्नति की आधार-शिला है। एक पाश्चात्य दार्शनिक का क्रथन है कि एकाग्रता से शरीर बल, मनोबल और आत्मबल दृढ़ होता है। पुरुषार्थ पर विश्वास ही मानव को श्रेष्ठ कर्मों की ओर अग्रसर करता है। साहस और उच्च विचार मानव के जीवन में आशा की किरणें उतार लाते हैं। इसके विपरीत भाग्यवादी पुरुष अपने अदम्य साहस और पुरुषार्थ का लुटेरा है। पुरुषार्थी कभी थकता नहीं, बाधाओं से जूझकर आगे निकल जाता है। सच्चे पुरुषार्थी अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित कर उसकी प्राप्ति के लिये पुरुषार्थ करते है क्योंकि लक्ष्य की स्थिरता मानव की सफलता की सीढ़ी है और पुरुषार्थी एकाग्रता के सहारे उस सीढ़ी पर चढ़ जाता है।

लक्ष्य की स्थिरता के साथ-साथ आत्म-विश्वास और साहस, पुरुषार्थ के अभिन्न अंग बन जाते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है। इतिहास के पन्ने पलट कर देखा जाये तो आप पायेंगे आत्म-विश्वास कभी पराजित नहीं हुआ। इसी आत्म-विश्वास ने वेसले नेलसन को सेनापति बनाया। नेपोलियन को सेना के छोटे-से सैनिक से उठाकर फ्राँस का ताज पहना दिया। और आत्मबल पर्वत लाँघने का उत्साह प्रदान किया। पोरस को सिकंदर से लड़ने की प्रेरणा दी। यही आत्म-विश्वास पुरुषार्थियों का तेज, दुर्बलों का प्रकाश द्वीप, जन-नायकों का ओज और अनाथों का जीवन है।

साहस में जो शक्ति निहित है वह बड़ी-बड़ी विपत्तियों को चकनाचूर करने में सर्व-समर्थ है। साहसी चूड़ावत ने एक छोटी-सी सेना लेकर औरंगजेब की विशाल सेना के दाँत खट्टे कर दिये। वीर शिवाजी का साहस संपूर्ण भारत पर छा गया। इतिहास में ऐसे अनेक योद्धा मिलते हैं जो पुरुषार्थ, साहस और आत्म-विश्वास के बल से सफलता की ऊँची चोटी पर विजय की ध्वजा फहराने में सर्व-समर्थ हो सके।

इसके साथ-साथ पुरुषार्थी के जीवन में एकाग्रता की महत्ता भुलाई नहीं जा सकती, वह मानव के उत्थान की सहचरी के समान है। अपनी सफलता का मूल उद्देश्य बताते हुए "चार्ल्स किंग्सले" ने लिखा :—

"किसी भी कार्य को करते समय संसार की अन्य कोई बात मेरे सामने प्रस्तुत नहीं होती।" अर्जुन की धनुष बाण चलाने में सफलता का आधार भी यही एकाग्रता थी। इसी प्रकार एकलव्य की वीरता और तीर तरकश की निपुर्णता में यही एकाग्रता का साथ

(शेष पृष्ठ ६ पर)

"एक अविस्मरणीय वृत्तान्त"

(ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, माऊण्ट आबू)

निराकार परमात्मा शिव ने सृष्टि को पावन बनाने के लिए कन्याओं-माताओं को शक्ति स्वरूप बनाकर समस्त विश्व को चुनौती दिलाई और कष्टों को हँसते-हँसते खेल समझकर सह जाना सिखाया। इसी सम्बन्ध में एक सत्य वृत्तान्त जो हमें दादी मनोहर इन्द्रा जी ने सुनाया, इस प्रकार है :—

बाबा निडर एवं अभय बनाते थे

बाबा ने अविनाशी रूद्र यज्ञ के घोड़ों को विश्व में छोड़ दिया और वरदान दिया कि इन अश्वों को कोई भी मानवीय या आसुरी शक्ति रोक नहीं सकेगी। सेवा के प्रारम्भ काल में मैं और गंगा बहन (उ० प्र० क्षेत्र इन्चार्ज) दिल्ली की ओर रवाना हुए और हम एक श्री लक्ष्मी व श्री नारायण के मन्दिर में ठहरे। मन्दिर में ही हमने अपने चित्र-कल्प वृक्ष व त्रिमूर्ति लगा दिये थे और हम मन्दिर के निम्न भाग में रहते थे। जो भी इच्छुक वहाँ आता, हम उसकी ज्ञानयोग की सेवा करते थे।

अचानक एक दिन हमारे सामने एक विघ्न आ गया जिसका हमें ख़याल भी नहीं था। उस मन्दिर का एक ट्रस्टी एक वकील वहाँ आया और उसने देखा कि ब्रह्माकुमारियों का कल्पवृक्ष का चित्र वहाँ लगा हुआ है। उस ओर आकर्षित होकर वह उसे पढ़ने लगा परन्तु ज्यों ही उसका ध्यान नीचे की एक पट्टी पर गया त्यों ही उसकी भौंहें तन गईं। उसने पुजारी को बुलाकर डाँटा और हमें बुला भेजा। गंगा बहन ऊपर मन्दिर में गई। वह वकील क्रोध वश बोला—"यह क्या, चित्र बना रखा है और क्या लिख रखा है, उसने बुरा भला कहने के साथ-साथ चेतावनी दी कि या तो यह पट्टी उतारो या मन्दिर छोड़ो।

एक सैकिड में निर्णय करना था। गंगा बहन ने सोचा अभी कहाँ जायेंगे, चलो पट्टी उतार देते हैं। इसमें हमारा क्या जाता है ? अगर इसे नहीं उतारेंगे तो बाबा की सेवा भी नहीं कर सकेंगे और बहुत कठिनाई भी होगी। यह सोचकर गंगा बहन ने वह पट्टी उखाड़ दी और नीचे आकर मुझे समाचार सुनाया। मैंने कहा—"ठीक ही किया, वरना और करती भी क्या ?"

अगले ही दिन यह समाचार हमने बाबा को लिख भेजा और बहुत जल्दी ही शिक्षाओं और सूक्ष्म अलौकिक शस्त्रों से भरा बाबा का पत्र प्राप्त हुआ जिसे पढ़कर हम अपनी भूल महसूस करने लगे और हममें साहस का बीज अंकुरित हुआ। बाबा ने लिखा था—"तुम शेरनी नहीं बकरियां हो···तुम कैसे संसार को स्वर्ग बनाओगे, तुमने डर से ही अपनी सत्य बात को ही छुपा दिया। अगर कोई किसी मुसलमान को कहे कि अपनी कुरान से फलाँ आयत निकाल दो तो क्या वह निकालगा ? मर मिटेगा आयत नहीं काटेगा परन्तु तुम इतनी कमज़ोर निकलीं कि भगवान के शब्दों को ही हटा दिया—आदि। इस प्रकार प्यार-भरा व बल प्रदान करने वाला बाबा का पत्र प्राप्त हुआ। इससे हमें एहसास हुआ कि बाबा हमें कितना बलवान देखना चाहते हैं।

उस दिन से मन्दिर वालों का हमसे व्यवहार भी बदल गया और हमने स्थान परिवर्तन का निर्णय किया। और तुरन्त ही एक व्यक्ति जो कि हमारे सत्संग में आता था बोला कि आप यहाँ क्यों रहती हो ? यहाँ कौन आयेगा ? चलो, मैं आपको एक ऐसे स्थान पर ले चलूँ जहाँ बहुत लोग स्वतः ही आयेंगे।

हमने चलने की तैयारी की और वह हमें ले चला सुनसान स्थान पर, यमुना के किनारे, जहाँ बिना दरवाज़े के एक खुला-सा मकान था और उसी के बीच

से रास्ता था। दोनों ओर बठने के लिये फ़श बने हुये थे···

हम दो बहनें यहाँ कैसे रहेंगी ? अकेली ?—मन में यह भय व्याप्त था। परन्तु वह भाई हमें कहता था कि तुम तो शक्तियाँ-देवियाँ हो, तुम्हें क्या डर ? हम कुछ कह भी न सकीं और वहीं सामान रख दिया।

ये था धर्म स्थापना के कार्य में कष्ट जिसको कल्पना में तो नहीं बाँधा जा सकता परन्तु उस समय हमारी क्या स्थिति रही होगी। इसका कुछ अनुमान अवश्य ही लगाया जा सकता है। धीरे-धीरे सूरज ढला—ओर हम वहाँ दोनों अकेले ही रह गये। सहारा था बाबा की छत्रछाया और उस पर निश्चय। रात्रि को हम में से एक सोती थी, एक जागती थी···हम बहनें थीं, चोरी का भी डर था। मकान के दरवाज़े भी नहीं थे व लाईट भी नहीं थी···

एक-दो दिनों के बाद हमने देखा कि ज्यों ही रात्रि बढ़ती है--एक पहलवान-सा व्यक्ति हमारे चारों ओर घूमता नज़र आता है। यह देखकर हम तो बहुत ही डर गईं कि हम कहीं फँस गये हैं। परन्तु बाबा की याद हमारे धैर्यता को बढ़ाती रही। वहाँ स लोग गुज़रते थे और हमें दोनों ओर बैठा देवियाँ समझकर मस्तक झुकाकर चले जाते थे। सारे दिन बाबा की ईश्वरीय सेवा की खुशी हमें कष्टों का एहसास नहीं करने देती थी।

और एक दिन अचानक ही हमने क्या देखा कि कुछ व्यक्तियों का झुण्ड बाजे बजाता हुआ और नाचता हुआ हमारी ओर बढ़ा आ रहा है। इसमें आगे-आगे कई पहलवान भी आ रहे थे। जैसे-जैसे हमें लगा कि ये हमारी ही ओर आ रहे हैं, हमारा डर सीमाएँ छोड़ गया। हम बाबा को याद करने लगीं कि अब क्या होगा।

परन्तु भगवान के बच्चों की रक्षा तो वह स्वयं ही करता है। कुछ ही मिनटों में वे हमारे पास आ गये और उनमें से एक पहलवान हमारे चरणों में गिर गया। यह देखकर हम हैरान भी थे और मन ही मन बाबा के गुणगान भी कर रहे थे।

उन्होंने हमें बताया—

कि जिस दिन आप यहाँ आईं और सभी को ज्ञान देती रहीं तो हमें लगा कि सचमुच आप देवियाँ हैं उन्हीं दिनों हमारी कुश्ती तय होनी थी। मैंने प्रण किया कि अगर मेरी जीत हुई तो मैं समझूँगा कि ये सत्य चेतन देवियाँ हैं और इन्हें कुछ भेंट चढ़ाऊँगा। तभी से हमने एक पहलवान को रोज़ रात्रि को आपके चारों ओर पहरा देने के लिए नियुक्त कर दिया था ताकि आपको कुछ कष्ट न हो।

वे अपनी प्रतिज्ञानुसार हमें भेंट देने आये और हमें उन्होंने किसी भी प्रकार का कष्ट न होने देने का आश्वासन दिया। यह था एक अनुपम अनुभव जिसने हमें बहुत कुछ सिखाया और इसी स्थान से दिल्ली की ईश्वरीय सेवा तेज़ी से आगे बढ़ी।

यह था स्थापना के दिव्य कर्त्तव्य में बाबा की मदद का एक वृत्तान्त जिसे सुनकर हमें भी कष्टों में बाबा की छत्रछाया को न भूल जाने की श्रेष्ठ प्रेरणा मिलती है और हमें अपने सिद्धान्तों में कितना दृढ़ होना चाहिए—यह दृढ़ संकल्प भी मन को बलवान बना देता है।

—:०:—

कहनी है एक बात हमें इन देश के कर्णधारों से

ले० ब्रह्माकुमारी मनोरमा

कल बस मैं सफर कर रही थी। अचानक एक झटका लगा और बस रुकी। मैंने देखा—कन्नौज का बस-स्टॉप था। चारों ओर एक कलरव उत्पन्न हो गया। उतरने वाले उतरने लगे और नीचे खड़े हुए यात्री भी एकाएक गतिशील हो गये और सीट लेने के लिए प्रयत्नशील हो गये।

तभी एक करुणा-स्वर कानों में गूंजा "ऐ माई-बाप, १० पैसे दे दो, सुबह से भूखा हूँ। ऐ बाबू, ऐ बहिन, मेरा कोई नहीं है, आप ही दाता हैं, बस १० पैसे" और·····यह स्वर शनैः-शनैः मेरे करीब आता चला गया। मैंने देखा—एक मासूम बच्चा मेरे सामने हाथ फैलाये खड़ा था। मेरा हाथ कब पर्स की ओर गया और कब मैंने उसे १ रुपए का नोट निकालकर दे दिया, यह अचेतन में ही हो गया। एहसास तब हुआ जब वह विस्फरित नेत्रों से कभी उस नोट को और कभी मुझे देख रहा था और उसके बाद जो कुछ हुआ वह असहनीय था। उसने हजारों आशीर्वाद और दुआयें देते हुए मेरे पाँव पकड़ लिये। मुझे ऐसा लगा कि वह मेरे पैर नहीं मेरी आत्मा को पकड़कर झक-झोर रहा था।

मेरे मन में कई प्रश्न उभरने लगे। क्या यह हमारे देश के नौनिहाल नहीं हैं? क्या यही भविष्य भारत के कर्णधार होंगे? कैसी दर्दनाक स्थिति है हमारे देश की! ऐसी सूरत एक नहीं, हर बस स्टॉप, रेलवे स्टेशन पर, मन्दिरों के बाहर आपको हाथ पसारे ऐसे अनेकों चहरे मिलेंगे। क्या इनकी आँखों में कभी झाँका हैं आपने? आपने भी सुना होगा—माँगना इनकी आदत है जी, अजी रोज़ का काम है इनका तो, सब पढ़े हुये हैं, बस मेहनत से जी चुराते हैं; इन्होंने ही तो देश का नाम बदनाम कर रखा है···। ज़रा विचार कर देखें कि सारे जज़बातों को रोककर भी यह हाथ बाहर बढ़ा ही रहता है—क्यों? क्या इनकी कोई भावना नहीं? क्या आपकी तरह, आपके बच्चों की तरह इनके जज़बात नहीं मचलते? यह तो इनका पेशा है, यह तो इनकी आदत है—ये व्यंग कस कर छोड़ देने में ही हमें तुष्टि मिल जाती है। क्या कभी हमने यह जानने की भी कोशिश की कि सच्चाई क्या है? ये ऐसा क्यों करते हैं? और, जब तक हमने यह नहीं जाना, तब तक क्या लाभ हमारे इन कथनों का? जब तक हम इन को फुटपाथों से नहीं उठा पाये, तब तक क्या प्रगति की हमने?

सच तो यह है कि आत्मा विदीर्ण होती है, हमारे देश के इन होनहार कर्णधारों को देखकर। इनके हाथों में राष्ट्र की नैया है। ये माँझी है और जिस नौका का माँझी अधोगति को पाया हुआ हो, उसकी मंजिल का पता क्या होगा। आज हम सब यह चाहते हैं कि हमारा बच्चा इंजीनियर हो, डॉक्टर हो, वकील हो, समाज में सम्मानित हो। विलक्षण-प्रतिभा सम्पन्न बालक को देखकर शिक्षक भी चाहता है कि मेरा विद्यार्थी आगे चलकर आई० ए० एस० या पी० सी० एस० में बैठे और परीक्षाओं को निर्विघ्न पास करे। समाज चाहता है कि हमारे देश के बच्चे अच्छे नागरिक बनें। राष्ट्र अच्छा कर्णधार चाहता है। अतः हममें से हर एक बच्चे से कुछ-न-कुछ उम्मीद रखता है तो ज़रा इसके एक और पहलू पर भी नज़र डालिये कि वो जगतनियन्ता जिसने हमें भेजा है, उसकी भी हमसे कुछ आशायें हैं। अगर गौर फरमायें तो ज्ञात होगा कि वो भी हमें देवत्व में देखना चाहता है। मगर जहाँ हमें अपने माँ-बाप के प्रति, शिक्षक के प्रति, समाज के प्रति अथवा राष्ट्र के प्रति हमारे कर्त्तव्य सिखाये जाते हैं वहाँ परमात्मा पिता के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य हैं, यह किसी ने नहीं सिखाया।

यदि यह भी बताया होता तो आज घर-घर में नेहरु, गाँधी, शिवाजी और तिलक जैसे महान पुरुष पैदा होते और यहाँ तक कि श्रीकृष्ण, श्री राम – जैसे देवताओं का जन्म होता।

हम उम्मीद तो रखते हैं कि हमारे नौनिहाल ऐसे बनें। मैं कहती हूं कि हम उन्हें ऐसा बनायें— ऐसा लक्ष्य क्यों न रखें लेकिन उसके लिए हमें स्वयं मन रूपी घोड़ों पर लगाम लगानी पड़ेगी ? जब हम असत्य आचरण नहीं करेंगे, स्वयं संयमित होंगे, मिष्टभाषी होंगे, सहयोगी होंगे, सद्-आचरण होगा तो हमारा आचरण ही बच्चे के समक्ष एक आदर्श होगा। जब हमारे में दिव्य संस्कार होंगे, तब हम इन में भी आध्यात्मिकता की बुनियाद डालकर इन्हें भी देवता बना सकते हैं।

जैसा कर्म में करूंगा मुझे देखकर दूसरे भी करेंगे

हमारा संयम और मर्यादाओं से परिपूर्ण जीवन इन अनाथालयों को बन्द कर सकता है। आज आपके सामने नन्हें-नन्हें बच्चे बैण्ड बाजे के साथ आपके दरवाजे पर हाथ फैलाते हैं। क्या यह हमारी ही उपज नहीं जिनके मां-बाप का पता ही नहीं। हाय ! यही भारत कभी मर्यादा पुरुषोत्तम राम, लक्षमण, कृष्ण जैसे नौनिहालों को जन्म देता था। इसी भारत में शिवाजी जैसे भी थे जो विदेशी यवनों की नारी को (गौहर वानू)भी माँ बना गये थे। ये आदर्श था हमारे राष्ट्र का और आज ये बच्चे···तो क्या हमारे पतित होने का इससे भी बड़ा प्रमाण चाहिए।

मुझे ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में एक सम्मेलन में कुछ महावाक्य सुनने को मिले थे। जो आज भी रह-रहकर मेरे कानों में गूंजते हैं कि हम आज पूर्णतः पतित हैं, तमोप्रधान बन गये हैं। प्रकृति का प्रदूषण प्रकृति की तमोप्रधानता का प्रतीक है और इस कलियुग में परमपिता स्वयं हमें पावन बनाने आया है। वह हमें पूर्ण पवित्र बनाकर ही ले जायेगा और अब हमें पावन बनना है। यह अकाट्य सत्य मुझे आज भी वातावरण में गूँजता हुआ प्रतीत होता है।

बच्चे देश की शान हैं, इनकी मुस्कान हमारी सम्पत्ति है। हम इस शान को तभी बनाये रख सकते हैं जब हम स्वयं को बदलें क्योंकि शासन काग़ज़ी कार्यवाही तो कर सकता है, कानून बना सकता है किन्तु ये सब क्रियान्वित कौन करेगा ? हम और आप ही तो। हम और आप ही राष्ट्र के नागरिक हैं, समाज की ईकाई हैं, परिवार-परिवार की ईकाई हैं अर्थात् हम और हमारे संस्कार ही राष्ट्र की नींव हैं। 'धृ धारयाती इति धर्मः' धारणा ही धर्म। अतः इसके लिये हम आचरण की शसक्त शैली को समझें कि यह मूक होकर भी सशक्त अधिकार रखती है। मुझे एक कवि की पंक्तियाँ याद आ रही हैं :

"कर्मगति को अगति की संज्ञा न दो तुम
वयुगति द्रुति गामिता की इति नहीं है
मौन है अनुभूति की अभिव्यक्ति अनुपम
मंच ही अनुभूति की परिनिति नहीं है।"

ब्रह्मा बाबा के प्रति

(योगीराज, मधुवन, माउण्ट आबू)

तुम्हारे सिंह नाद ने, हर मन हिला दिया
तुम्हारी हँस चाल ने, जीवन खिला दिया।
चलते थे सिर उठा के, माया सिर नवाती थी,
तुम्हारी दृष्टि पाने को, नजरें तरसाती थी,
तुम्हारो शान ने सभी का, मस्तक झुका दिया
तुम्हारी हँस चाल·····
रूह को देखना तेरा, रूहानी प्यार भर देता
मुख से बच्चे कह देना, हमारे मन को हर लेता
तुम्हारी नूतन सृष्टि ने, जग को हिला दिया,
तुम्हारी हँस चाल·····
काम था क्लिष्ट जो अब तक, आसान कर दिया,
पावन बनाकर गृहस्थ को, ललकार कर दिया,
तुम्हारी भावनाओं ने, हमारा पाप हर लिया,
तुम्हारी हँस चाल·····

युवा वर्ग और विश्व-परिवर्तन

ले० ब्रह्माकुमार अरविन्द कापड़िया, सूरत

विश्व की सर्व आत्माओं की आशा-निराशा का केन्द्र युवा वर्ग है जिसमें स्वाभाविक रूप से ही एक समूचे नव-निर्माण की बागडोर संभालने को अत्यधिक श्रद्धा रखी जाती है। सतयुग निर्माण और कलियुग विनाश के रहस्यपूर्ण परमात्मिक कर्त्तव्य की गति-विधि को स्वयं भाग्य विधाता परमपिता परमात्मा के द्वारा सही रूप से जान लेने पर दिल से यही आवाज़ उठती है कि सारे संसार को आधि, व्याधि से मुक्त करने के लिये युवा वर्ग को 'आध्यात्मिक क्रान्ति' की ईश्वरीय ज्ञान-मशाल लेकर, समाज का सुयोग्य नेतृत्व करते हुए, अपने देश को फिर से सर्वोत्तम (सोने की चिड़िया) बनाने की भव्य एवं दिव्य राहों पर, सर्वशक्तिवान भगवान के ही 'एक बल एक भरोसे' पर अपने पूरे जोश और होश को कार्यान्वित करने में देर लगाने की अब कोई गुंजाईश नहीं है।

आजतक युवा वर्ग के द्वारा कोई हिंसक एवं भौतिक और वैज्ञानिक क्रान्तियों के सूत्रधार बनने पर भी एक गहरी निष्फलता के बादल समाज के क्षितिज पर छाए हुए हैं। इससे स्पष्ट है कि अन्तिम आध्यात्मिक क्रान्त का समय अवश्य ही आ पहुँचा है। अब असहाय मानव समाज को सच्चा अविनाशी सहारा देने के लिये, बिगड़ी को बनाने वाले, हर मुश्किल को आसान करने वाले, परमपिता परमात्मा के दिव्य अवतरण की पहचान का पावन पैग़ाम सारे संसार में पहुँचाना होगा तभी फिर से दैवी राम-राज्य की स्थापना और आसुरी रावण राज्य का अन्त होगा।

सबसे अधिक खुशी की बात तो यह है कि स्वयं चेतन ज्ञान-सागर, मनुष्य सृष्टि के बीज रूप, दुःख-हर्ता, सुख-कर्ता प्रभु, दिव्य दृष्टि विधाता, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ, त्रिमर्ति परमात्मा शिव परमपिता, परम शिक्षक एवं परम सतगुरु के रूप में इस पुरानी जड़जड़ीभूत मनुष्य सृष्टि का महाविनाश कराने और नयी सतयुगी दैवी स्वराज्य की स्थापना कराने के लिये इस भारत के भूतल पर फिर से पधारे हुए हैं—सच मानिये, यह हकीकत है। इसलिए सदा निराकार, निर्विकारी और निरहंकारी, निःस्वार्थ रूहानी सेवाधारी, रूहों को राहत पहुँचाने वाले, प्राणेश्वरी शिव पिता की पावन छत्रछाया में चलना युवा वर्ग के लिए अत्यन्त सहज, सानुकूल और अत्याधिक उपयुक्त है।

इस समय संसार एक ऐसे मोड़ से गुजर रहा है जैसा कि मनुष्य ने अपने समूचे इतिहास में न कभी देखा है और न कभी देखेगा। यह वही महाभारी महाभारत के युद्ध की बेला है कि जबकि प्रीत बुद्धि शिव शक्ति पाण्डव सेना, विपरीत बुद्धि विकारी कौरव सेना और युरोप निवासी विज्ञान-घमंडी आत्माओं की यादव सेना विश्व के कर्म क्षेत्र पर एक साथ उपस्थित हैं, अतः श्रेष्ठ कर्म के बीज बोने की अनमोल घड़ियाँ हैं। आणविक विश्व-युद्ध, कुदरती आपदाओं और गृहयुद्ध के आसार भी हमारे सामने हैं जिससे स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि विश्व अपने सर्वोच्च परिवर्तन की अन्तिम सीमा तक पहुँच गया है। इसलिए अब फौरन ही पाप और पुण्य के स्पष्ट भेद को जानकर, कर्मों की गहन गति को समझकर पापात्मा से पुण्यात्मा बनाने की ओर अपने जीवन को मोड़ लेंगे तो विश्व-परिवर्तन से पहले स्वयं परिवर्तित हो जाने से हर हालात में सुरक्षित रहेंगे।

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि विश्व-भर में हजारों नवयुवकों और नवयुवतियों ने समय की कद्र को जानकर अपने जोशीले उमंग-भरे ठोस कदम सर्वोत्तम प्राचीन राजयोग और सहज ईश्वरीय

ज्ञान की दिशा में उठाये हैं और अपने तन, मन, धन से भारत को फिर से देवभूमि बनाने की सेवा में जुटे हुए हैं। अन्य सभी युवा वर्ग के भाई-बहनों से हमारा नम्र निवेदन है कि आप भी आध्यात्मिक क्रान्ति के सूत्रधार बनें और फिर विश्व में गाँधी जी के स्वप्नों के रामराज्य की स्थापना करने में सहयोगी बनें।

—:o:—

ईश्वरीय कर्तव्य का इतिहास

(लेखिका ब्रह्माकुमारी सावित्री, मण्डी)

एक हीरे जवाहरातों का व्यापारी,
था कलकत्ते की नगरी में रहता।
दादा लेखराज के नाम से,
दुनिया में जाना जाता॥
गीता का प्रेमी, नारायण का भक्त,
राजाओं का ठाठ देवताओं-सा अनासक्त।
अधरों पे रहती थी मुस्कान छाई,
देती थी किसी समय की दुहाई॥
इस तरह से थी उसकी दुनिया चल रही,
परिवार में सुख शान्ति थी पल रही।
मगर होनी ने ऐसा चक्र चलाया,
दादा का धन्धे से मन उकताया॥
उम्र साठ के करीब, घटना घटी अति प्यारी
परमपिता शिव ने बनाया उसे अपनी सवारी।
साक्षात्कार द्वारा सृष्टि का विनाश दिखाया,
स्थापना का भी साथ में चक्र दोहराया॥
मधुरता से तब शिव बाबा बोले, उठो ऐ मेरे सेनानी,
तेरे द्वारा मुझे नई दुनिया है अब बनानी।
देह सहित तब दादा ने किया सभी कुछ अर्पण,
बना औरों के लिए वो ज्ञान का दर्पण॥
ब्रह्मा द्वारा शिव बाबा लगे अब मुरली सुनाने,
सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का इतिहास लगे दोहराने।
सुनता जो उसको चढ़ जाती मस्ती एक रूहानी,
मिल चुका था अब परमपिता शिव वरदानी॥
सिन्ध छोड़ा और आन आबू पे किया बसेरा,
लवलीन हुए तपस्या में लाने को नया सवेरा।
इस तरह चौदह वर्ष तक रखी तपस्या जारी,
बने गुप्त रूप से सब विकारी से निर्विकारी॥
बाबा- ममा का साथ पाकर न बच्चे मुरझाये,
चौदह वर्ष तो बस आँख झपकते बिताये।
अपना तो एक शिव बाबा दूसरा न कोई,
उसी के मार्ग दर्शन में आत्मा के सुख पाये॥
ज्ञान को सुनते ही आत्मायें गद्‌गद् हो रही थीं,
कई जन्मों से जो बाप को मिलने को तरस रही थीं।
देखते ही देखते आबू में सागर उमड़ आया,
बच्चों ने प्यारे बाबा का जी भरके प्यार पाया॥
फिर अव्यक्त पार्ट का सीन चलाया,
ज्ञान रत्नों से बहुत-बहुत हमको सजाया।
अव्यक्त भट्ठियों का भी सीन चलाया,
शक्ति स्वरूप में हमको उसने टिकाया॥
लगता है राही अब दूर जा रहा है,
ईश्वरीय रंगमंच पर सीन नया कोई आ रहा है।
अव्यक्त पार्ट का भी अब सायरन बज रहा है,
सर्वोत्तम ब्राह्मणों का अब काफ़िला चल रहा है॥
ऐ आत्माओं! अब दृढ़ संकल्प की तीली लगा लो,
समय बहुत कम है, मन के पट तो खोलो।
रचयिता और रचना का भेद तो तुम पा लो,
पुनः अपने को देवी-देवता बना लो॥
फिर पीछे न कहना हमें पता न पड़ा,
तुम्हारे दरवाजे पर था खुद शिव बाबा खड़ा।
भाग्य विधाता आया है भाग्य अपना जगा लो,
बिगड़ी हुई तकदीर फिर से संवार लो॥

योग की चोटी पर शीतलता

ले० ब्रह्माकुमारी सुषमा, कोलाबा, बम्बई

'योग' शब्द के स्मरण एवं सुनने से ही दिव्यता की तरंगें, लहरें (Vibrations) मानस-पटल पर उभरने लगती हैं। बुद्धि स्वतः ही इस कलहयुगी दुनिया से परे हो शिव बाबा की ओर चली जाती है। परमपिता परमात्मा द्वारा सिखाये गये सहज राज-योग को भूल लोगों ने उसे हठयोग, नामयोग, ध्यान-योग आदि-आदि विभिन्न नामों से विभूषित किया। योग के विभिन्न नामों के भ्रम में आज का मानव भटक कर पवित्रता, सुख, शाँति से परे हो गया है। परन्तु, फिर भी उसकी पिपासा इन्हीं तीनों ईश्वरीय वरदानों को पाने हेतु प्रयास में तत्पर हैं।

योग क्या है ?

वस्तुतः आज मनुष्य योग का अर्थ जीवन के दैन्य-दिनों के कर्त्तव्यों को छोड़ने का ही विषय समझते हैं। वर्तमान समय का योगी पलायनवादी ही समझा जाता है। किन्तु योग तो आत्मा व परमात्मा के मधुर मिलन का नाम है। जब आत्मा निज स्वरूप में स्थित हो परमपिता परमात्मा से मन के तार जोड़कर प्रभु के गुणों का अनुभव करती है, इसे ही योग कहा जाता है।

योग की ऊँचाई :

पहाड़ पर चढ़ने वाले व्यक्ति को शुरु में थोड़ी कठिनाई तो महसूस होती है परन्तु उसके सामने ऊँचाई पर पहुँचने का लक्ष्य, रास्ते की ठंडी हवायें, प्राकृतिक सौन्दर्य का आकर्षण उसकी कठिनाइयों व परेशानियों की महसूसता को कम कर देता है। हाँ, उसमें हिम्मत, लग्न व साहस तो चाहिए ही। वैसे ही योग की प्रथम अवस्था में देह व देह के संकल्प, विकल्प आयेंगे अवश्य, जो प्रभ से मन के तार जोड़ने में बाधक होंगे। पर निरन्तर अभ्यास, दृढ़ संकल्प, ज्ञान स्वरूप की अवस्था में टिकने पर ये साँसरिक बाधायें योग एवं योगी के मार्ग में रुकावट पैदा करने में व्यर्थ सिद्ध होंगी। योगी के कदम-कदम में फूल बिछे हुए हैं। हमारा जीवन खुशनुमा व खुशबूदार बन जायेगा क्योंकि कर्मों की गुह्य गति को जानने से कर्म योग-युक्त होंगे, ज्ञानयुक्त होंगे और सफलता स्वतः ही होगी। सफलता से जीवनोल्लास बढ़ेगा। समस्यायें गौण व नगण्य प्रतीत होंगी क्योंकि जीवन में उत्साह है, उल्लास है। हतोत्साहित जीवन तो छोटी-मोटी समस्याओं को तिल का ताड़ बना देता है।

जब हम पहाड़ी पर ऊपर चले जाते हैं तो हमें नीचे की आवाज़ों का असर नहीं होता क्योंकि तब हम नीचे के वातावरण से अलग हो जाते हैं। थल का वातावरण नभ पर पहुँचने में सक्षम नहीं। इसी तरह जब राजयोगी अपनी उच्चतम स्थिति या अव्यक्त स्थिति में स्थित होता है तो वह लौकिकता से परे हो जाता है किसी के भाव-स्वभाव की लहर से वह प्रभावित नहीं होता।

योग रूपी डिब्बी (Box)में आत्मारूपी हीरा है। जैसे बन्द डिब्बे में हीरे पर धूल आदि नहीं पड़ती उसी तरह योग रूपी डिब्बी में आत्मा रूपी हीरे के बन्द रहने पर उस पर समस्यायें रूपी धूल व गंदगी नहीं पड़ पाती।

योग के लिए स्मृतियां—

योग की ऊँची अवस्था का लक्ष्य प्राप्त करने के लिये हमें कुछ दिन स्मरण रूपी स्टेशन याद रखने चाहिये। यात्री की बुद्धि में स्टेशन तो होता ही है। योगी-यात्रियों के लिए सात स्टेशन याद रखना आवश्यक है—

(१) जीवन का प्रत्येक क्षण अमूल्य है। बीता हुआ समय फिर लौटकर नहीं आता। यदि प्रभु स्मृति व श्रेष्ठ कर्मों में श्वास न बीते तो फिर धर्मराज की सजा खानी पड़ेगी।

(२) मनुष्य-मनुष्य के किये हुए एहसानों को नहीं भूलता। परमात्मा तो खिवेया है, जीवन रूपी डूबती नैया को पार लगाने वाले हैं, फिर हम उनके एहसानों को क्यों भूलें।

(३) मनुष्य-मत, गुरु-मत, शास्त्र-मत आदि-आदि मतों पर चलने पर भी सुख-शान्ति नसीब न हुई। कम-से-कम अब तो सुख के सागर, शान्ति के सागर आनन्द के सागर प्रभू की श्रीमत पर चल अपने जीवन, को श्रेष्ठ बनाना चाहिए।

(४) दुःख-हर्ता, सुख कर्ता प्रभु ही मुझे दुःखों से निवृत्त कर सुख प्रदान करेंगे, इसलिए मुझे उनकी ही मत पर चलना है।

(५) परमात्मा ही निराशा में आशा का संचार करने वाले हैं, बेसहारों के वे ही सहारे हैं।

(६) यह विशाल सृष्टि एक रंग-मंच है और हरेक आत्मा अपना-अपना अभिनय कर रही है। इससे भाव-स्वभाव, विकल्पों आदि से परे रहने में और शिव बाबा से मन की तारों को जोड़े रखने में मदद मिलती है।

(७) सर्वगुणों के सागर परमात्मा से योग लगा कर मुझे स्वयं में सर्वशक्तियों का उदय करना है।

योग और पवित्रता—

राजयोगी बनकर जीवन व्यतीत करने के लिये पवित्रता को मन, वचन व कर्म में अपनाना उतना ही आवश्यक है जितना कि शरीर के लिए भोजन एवं वस्त्र की। कहावत है–Purity is Royalty and Royalty is real Pesonality—पवित्रता ही आत्मा का श्रृंगार है। पवित्रता की नींव पर ही राजयोगी जीवन की आधारशिला रखी जा सकती है। पवित्रता के बल पर ही हम अपने मन, वचन एवं कर्म में श्रेष्ठता ला सकते हैं। जितनी-जितनी पवित्रता हममें आती जायेगी, उतना-उतना हमारा मन स्वतः ही शुद्ध होता जायेगा। अंग-अंग शीतल हो जाता है। विकार संकल्प तक तो स्पर्श करने में विफल रहते हैं। पवित्रता को अपनाने में आत्मिक दृष्टि, वृत्ति व स्मृति बहुत सहायक होती है। पहले मन को पवित्र बनायेंगे तभी योगी बन पायेंगे। योगी बनने के लिए संसार छोड़ने की आवश्यकता नहीं वरन् मन को पवित्र बनाने की आवश्यकता है।

योग सहज कैसे हो ?

हमें अपने पुराने संस्कारों को समाप्त कर दिव्य संस्कारों को उदय करना है। हमें मन का दमन नहीं करना है बल्कि मन को सुमन करना है। निरन्तर अभ्यास से कुसंस्कारों को सुसंस्कारों में परिणित करने में मदद मिलती है।

योग और अन्तर्मुखता

योग और अन्तर्मुखता में भी गहरा सम्बन्ध है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। कहा भी जाता है अन्तर्मुखी सदा सुखी, बाह्यमुखी सदा दु खी। यह तो सत्य है कि पवित्रता आत्मा का श्रृंगार है लेकिन अन्तर्मुखता तो उसकी शोभा में चार चाँद लगा देती है। इत्र दिखाई तो नहीं देती पर उसकी महक, खुशबू सबको आकर्षित कर लेती है। उसी तरह अन्तर्मुखी योगी भी सर्व आत्माओं के मन का तार शिव बाबा से जुड़वाने में सहायक होता है। स्वयं के साथ दूसरों को भी योग की दिव्य अनुभूतियों का अनुभव करा सकता है। अनुभव कहता है कि अन्तर्मुखता के पीछ अन्य सर्व गुण परछाई की तरह चले आते हैं क्योंकि तब मन शांत व बुद्धि एकाग्र होती है। वह स्वयं से भी संतुष्ट रहता है और दूसरे भी उससे सन्तुष्ट रहते हैं। कई बार ऐसा होता है कि हम स्वयं से सन्तुष्ट हैं पर दूसरे हमसे सन्तुष्ट नहीं हैं ! या दूसरे तो सन्तुष्ट हैं पर हम स्वयं से रुष्ट हैं। सन्तुष्टता का सन्तुलन (Balance) अन्तर्मुखता से ही सम्भव है। और सच पूछिए तो सच्चे राजयोगी जीवन की यही तो अधारशिला है।

i शाखा द्वारा आयोजि। एक H संवाद के अवसर पर ब्र० कु० सरला जी ईश्वरीय सन्देश सुना रही हैं, मच पर e सम्प्रदायों के विद्वान विराजमान हैं, mमने कांची के शंकराचार्य जी बैठे

कालेज स्क्वायर (कटक) में आयोजित विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन डी० एम० और एस० डा० औ० ज्योति जलाकर कर रहे हैं साथ में ब्र० कु० कुलदीप, ब्र० कु० मंजु व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

अष्टा में गीता पाठशाला का उद्घाटन महाराष्ट्र राज्य के महसूस मंत्री शालिनीबाई पाटील जी ने किया, साथ में ब्र० कु० सुन्दरी जी, ब्र० कु०नंदा जी तथा अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

नीमच उपनगर बयाना में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन नीमच के जिलाधीश एस० एस० वर्माजी एवं सी० आर० पी० एफ० के ग्रुप कमाण्डेन्ट सी० पी० सिंह जी दीप जलाकर कर रहे हैं।

करनूल में आयोजित मेले के समाप्ति के अवसर परअ तिथी रामलिंगय्या के साथ ब्र. कु. सरला जी तथा अन्य भाई बहन उपस्थित थे।

लखनऊ में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगाई गयी जिसका उद्घाटन रामजीवन बाबू लाल बर्तन के व्यापारी कर रहे हैं।

पवतमाल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के प्रसिद्ध डा. काने जी ने किया साथ में ब्र. कु. रूकमणी जी खडी हैं।

कोल्हापुर जेल में ईश्वरीय संदेश देने का कार्यक्रम हुआ। उस अवसर पर राष्ट्र प्रगति के सम्पादक जो आये थे। साथ में जिला मुख्य अधिकारी जी, ब्र कु सुनन्दा जी बैठी हैं।

संडूर में आध्यात्मिक प्रदर्शनो के उद्घाटन के अवसर पर युवराज गोरपड़े प्रवचन कर रहे हैं, मंच पर ब्र कु बहनें बैठी हैं तथा गोरपड़े बहन बैठी हैं।

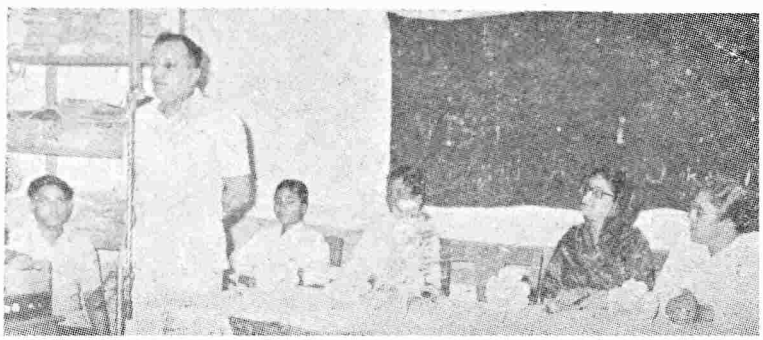

एक छोटी-सी चिंगारी, भयंकर आग

लेखक—ब्रह्माकुमार दिगम्बर, राँची

आज सारे विश्व में हर सम्प्रदाय के मानव स्वयं में परिवर्तन चाहते हैं। उसके लिए वे अनेक प्रकार के साधन अपनाते हैं परन्तु ड्रामा की भावी अनुसार मनुष्य चाहते कुछ और हैं लेकिन होता ठीक उसके विपरीत ही है। इसका कारण क्या है? मानव में जब मानवता ही नहीं रही तो स्थापना के बदले अर्थात शान्ति की बजाय विश्व विनाश की ओर बढ़ रहा है। आज हर इन्सान के अन्दर तीव्र जिज्ञासा है कि विश्व में कुछ नया परिवर्तन हो परन्तु वह क्या होगा कैसे होगा, कौन करेगा? यह किसी को भी पता नहीं।

आज का संसार कल-कारखानों का संसार है और कारखाने को सुचारु रूप से चलाने के लिए उसमें अनेक विभाग होते हैं। कारखाने के अन्दर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा रहता है 'एक छोटी-सी चिंगारी भयंकर आग' (Small spark is a big fire), साथ-साथ बड़े लाल अक्षरों में दमकल केन्द्र (Fire Station) का टेलीफोन नम्बर भी दिया रहता है ताकि जितना जल्दी हो सके, चिंगारी लगते ही सुरक्षा के लिए फ़ोन कर सक। वैसे ही आज इस विश्व में एक छोटी-सी चिंगारी भयंकर आग का कारण बन गई है जिसने गरीब-अमीर, राजनेता, महात्मा, ऋषि, साधु-सन्यासी, सब को आ घेरा है। वह छोटी-सी चिंगारी कौन-सी है? देहाभिमान।

सृष्टि चक्र के दो युगों—सतयुग, त्रेतायुग,—में सभी देहीभिमानी थे तो देवता कहलाते थे। जन्म-पुनर्जन्म लेते-लेते, देह के सम्पर्क में आते-आते द्वापर युग में देहाभिमान की प्रवेशता हुई और फिर विकारों ने हमला कर दिया। कहावत भी है कि 'दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान (देहाभिमान)।' सब विकारों के गुलाम होने लगे तो भक्ति काल प्रारम्भ हुआ। लेकिन भक्ति भी पहले सतोप्रधान अव्यभिचारी भक्ति थी लेकिन धीरे-धीरे भक्ति में भी गिरावट आती गई और ५ तत्वों की भक्ति होने लगी। इसी प्रकार शुरू-शुरू में विकारों का भी इतना बोल-बाला नहीं था तो विकारों के प्रतीक रावण का बुत छोटे रूप में जलाया जाता था परन्तु अब ज्यों-ज्यों तमोप्रधानता बढ़ती जाती है, बुराइयों की अति होती जाती है त्यों-त्यों रावण का रूप भी अति भयंकर और बड़ा बनाते जा रहे हैं। इस देहाभिमान के कारण हर इन्सान मान, शान की इच्छा में एक-दूसरे को उठाने के बजाय गिराने अर्थात नीचा दिखाने में अपनी शान समझता है।

यह छोटी-सी विकल्पों की चिंगारी ही आज एक भयंकर आग अथवा विनाश के नजदीक ले जा रही है। सभी व्यवसायी अथवा सम्प्रदाय व्यर्थ तृष्णाओं के गुलाम बनते जा रहे हैं। चाहत हैं कि इनसे छुटकारा मिले, परन्तु शक्ति नहीं, साधन नहीं, साधन होने पर भी सुलझाने का युक्त नहीं, क्षमता नहीं। अतः जिस प्रकार कारखाने में आग्न से बचाव के लिए अग्नि शामक रखा रहता है ताकि छोटी चिंगारी जल्दी ही काबू में आ जाये उसी प्रकार ज्ञान-सागर, पतित-पावन, मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता, त्रिमूर्ति शिव भोलानाथ भी सारी सृष्टि की आत्माओं को, जो कामाग्नि की चपेट में आ गई हैं, ज्ञानामृत रूपी अग्नि शामक द्वारा शीतल बना रहे हैं।

कारखाने में जगह-जगह यह भी लिखा रहता है

(शेष पृष्ट ३५ पर)

शिव भगवानुवाच 'अभी हमारी भी सुनो'

लेखक—ब्रह्माकुमार मुन्नीलाल, बुन्दु कटरा, आगरा

सभी सुनायें अपनी-अपनी, और सभी ने बहुत सुना।
कष्ट, अशान्ति, चरित्रहीनता फिर भी और बढ़ा दुगुना॥
माँ बच्चे को सदा सुनाये, पापा, मामा, नाना कहना।
पिता सुनाते सदा रहे, नेक धर्म पर तुम चलना॥
गुरु सुनाये शिष्यों को, राम-राम ही तुम जपना।
माल पराया जो दिखता है, सदा उसे अपना कहना॥
पति सुनाये पत्नी को, बस, सेवा करना धर्म तुम्हारा।
पत्नी ने भी अर्ज सुनाया, खूब कमाना फ़र्ज़ तुम्हारा॥
नेता जी भी सदा सुनायें, सदा प्रगति करने की।
भले तरक्की कुछ न होवे, बात मंच पर कहने की॥
जनता ने भी सदा सुनाया, अपनी कष्ट—कहानी को।
कोई भी जन-क्षेत्र में आया, बताया निज परेशानी को॥
अपने-अपने ग्राहकों को, व्यापारी ने खूब सुनाया।
सस्ते से सस्ता सौदा है, सही-सही भाव बताया॥
वैद्य, डाक्टर सदा सुनायें, औषधि अपनी बिल्कुल अच्छी।
रोग हवा हो जाएगा, बात मानिये बिल्कुल सच्ची॥
रोगी ने भी सदा सुनाया, सुनिये डाक्टर बाबू।
पता नहीं किस कारण से, रोग न होवे काबू॥
पण्डित जी ने सदा सुनाया, मेरे प्रिय यजमानो।
अगर चाहते सुख घनेरा, बात हमारी मानो॥
पूजा-सामग्री दूनी करके, लड्डू-पेड़े का भोग लगाओ।
मंत्रों का नित जाप करो, अनाज यज्ञ में खूब जलाओ॥
साधु-सन्तों को भी निशि दिन, दान-दक्षिणा दिया करो।
जितने सारे तीर्थ हैं, चक्कर प्रति वर्ष किया करो॥
वैज्ञानिकों ने भी यही सुनाया, अपनी विशिष्ट करामात।
पलक मारते कर सकते हैं, विश्व का हम पूर्ण विनाश॥
'अभी हमारी भी सुनो', कहते शिव भगवान।

ब्रह्मा तन में आ कर के, करते यह फरमान॥
देह नहीं तुम देही हो, तुम अविनाशी आत्मा।
सिकीलधे बच्चे मेरे तुम, मैं परमपिता परमात्मा॥
अखुट शान्ति, सुख-सुविधा का, मैं ही केवल दाता हूँ।
स्वर्ग बनाकर इस सृष्टि को, ब्रह्मलोक फिर जाता हूँ॥
बहुत प्रयास किया इस जग ने, सुख-शान्ति लाने को।
लेकिन बिल्कुल विफल रहे, सही शान्ति पाने को॥
ब्रह्मा तन में मैं आया अब, तुमको ज्ञान सुनाने को।
सृष्टि चक्र के मर्म को, सत्य-सत्य समझाने को॥
गर चाहते हो स्वर्ग मिले, जीवन मुक्ति को पायें।
जीते जी इस जीवन में, सुख शान्ति हो जाये।
मेरा यह उपदेश है, तजकर पंच विकार।
ज्ञान योग को धारण कर, मुझसे कीजे प्यार॥
मैं गारन्टी करता हूँ, तुम्हें मिलेगा स्वर्ग।
जहाँ सुख शान्ति ही होगी, मिट जाएगा नर्क॥

(एक छोटी सी चिंगारी पृष्ट ३३ का शेष)

'सुरक्षा प्रथम' (Safety First) अथवा स्वयं की सुरक्षा आपकी व आपके परिवार की खुशहाली है। 'सुरक्षा प्रथम' भी अत्यावश्यक है। सु+रक्षा अर्थात स्वयं की रक्षा प्रथम। लेकिन स्वयं मैं कौन ? (Who am I?) मैं आत्मा हूँ और विकारों से आत्मा की सुरक्षा कराने के लिए अर्थात उसे पवित्रता, सुख, शान्ति का अधिकार दिलाने के लिए उसे अविनाशी आत्मिक पिता परमात्मा, परम शिक्षक, परम सद्-गुरु त्रिमूर्ति शिव से अटूट सम्बन्ध रखना है। इसके लिए हमेशा टेलीफोन नम्बर याद रहे—डबल जीरो (००) अर्थात मैं ज्योति बिन्दु (०) सत्, चित्, आनन्द स्वरूप आत्मा उस ज्योतिर्लिङ्गम (०) सत्, चेतन, आनन्द के सागर सदा शिव की अविनाशी सन्तान हूँ।

कारखाने में एक स्थान से दूसरे स्थान पर समान स्थानान्तरित करने के लिए एक रेलवे लाइन बिछी रहती है और हर चौराहे पर बड़े-बड़े लाल अक्षरों में लिखा रहता है—ठहरो, देखो, सुनो, आगे बढ़ो (STOP, LOOK, LISTEN, PROCEED) भयंकर दुर्घटनाओं से बचने के लिए ये सावधानी सर्वसाधारण को दी जाती है तथा हर कोई सदा ही अपने जीवन के बचाव के लिए सतर्क रहे। इसी प्रकार हमारी जीवन रूपी यात्रा भी अनेक समस्याओं से भरी पड़ी हैं। जीवन में अनेक प्रकार के उतार-चढ़ाव के मोड़, विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता ही है तो जीवन नैया को भी आगे बढ़ाने के लिए पहले जो भी संकल्प करते हैं तो ५ मिनट रुक कर (STOP) एक शिव बाबा की याद में खो जायें अपने भूतकाल, वर्तमान तथा भविष्य के कर्मों को अव्यक्त रूप से देखें (LOOK), शिव बाबा से रुह-रुहान करें और उससे पथ-प्रदर्शन (Spiritual guidance) लेते रहें (LISTEN) और फिर आगे बढ़ते चलें (PROCEED) इस प्रकार हर लौकिक कार्य में अलौकिकता लाने से परिवर्तन सहज ही हो जाएगा।

यह वक्त जा रहा है

ले०—सोनल एम० देसाई, बलसाड़

इस संसार में दो चीज़ों का कोई भरोसा नहीं। वह कौन-सी ? वे हैं-समय और श्वास। कोई कितना ही विद्वान हो लेकिन इन दो चीज़ों की गारंटी कोई नहीं दे सकता। किसको पता है कि हमारा अन्तिम श्वास कौनसा होगा ? न जाने जीवन का कौनसा पल अन्तिम पल होगा। अतः मनुष्य को यह सोचना चाहिए कि यदि आज मेरे प्राण छूट जायें तो मेरा क्या भविष्य होगा ? मेरी क्या गति होगी ? ऐसा सोचने से समय व्यर्थ चर्चा में, व्यर्थ संकल्पों में बिताने की बजाय आत्मोन्नति में लगा सकेंगे।

कई व्यक्ति कहते हैं कि 'कलियुग तो अभी बच्चा है।' लेकिन स्वयं परमात्मा के महावाक्य हैं कि 'कलियुग बच्चा नहीं है लेकिन अभी थोड़ा-सा बचा है' क्योंकि अब सारी सृष्टि पर पापों का बोझा बहुत बढ़ गया है और पाप का घड़ा जब भर जाता है तब फूटता ज़रूर है अर्थात् 'अति का अन्त ज़रूर होता है।' इस कहावत के अनुसार यह कलियुगी दुनिया जहाँ पापों की अति हो चुकी है, अधिक समय कैसे चल सकेगी। अतः क्यों न हम समय से पहले ही सावधान हो जायें ? समय पर तो सब सावधान हो सकते हैं, लेकिन हम समय से पहले ही अपना भाग्य क्यों न बना लें ? अंग्रेजी में एक कहावत भी है 'Time once lost can not be regained' अर्थात् बीता समय वापस नहीं लौटता, तो हमें जो-कुछ भी करना है, वह कल नहीं आज, आज नहीं लेकिन अब ही कर लेना चाहिये ताकि अन्त में पछताना न पड़े।

प्रिय आत्मन, यह वह पुरुषोत्तम संगम युग है जबकि परमात्मा शिव गीता में दिये हुए अपने वचनानुसार इस सृष्टि पर अवतरित हुए हैं और हम आत्माओं को आध्यात्मिक ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। लेकिन आश्चर्य की बात तो यह है जब हम औरों को यह आध्यात्मिक ज्ञान सुनने और सहज राजयोग के अभ्यास के लिए कहते हैं तो उनके मुख से यही निकलता है—'बहन जी मेरे पास समय नहीं।' इसका अर्थ तो यही हुआ न कि आज ऐसे व्यक्ति वक्त के गुलाम हैं। सोचने की बात तो यह है कि समय खुद-ब-खुद थोड़े ही मिलेगा, समय तो हमें निकालना पड़ेगा। इसलिए जबकि भाग्य-विधाता बाप स्वयं भाग्य बाँट रहा है तो हमें वक्त का मालिक बन अपना भाग्य बना लेना चाहिए। वर्ना जब समय निकल जाएगा तो हमें पछताना पड़ेगा। इसलिए अभी से ही 'शुभस्य शीघ्रम' अर्थात् शुभ कार्य में देरी न करके अपना जीवन दिव्य बना लें, आत्म-उत्थान करलें, अपनी बुझी हुई आत्मिक ज्योति जगा लें—यही प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का संदेश है।

आज हम देखते हैं कि विज्ञान शक्ति के चमत्कारों ने मानव-समाज की शान्ति को खतरे में डाल दिया है। इतना ही नहीं विज्ञान की शक्ति ने मानवता को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा किया है जिससे चारों तरफ अन्धकार, भय, चिन्ता ही नज़र आती है कहा भी जाता है न 'विनाश काले विपरीत बुद्धि'।

अतः अब समय को पहचान कर उस विज्ञान की शक्ति बल के मुकाबले हम अपनी शान्ति की शक्ति से सदाकाल के लिए अपना सुखमय दैवी स्वराज्य का ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन यह प्राप्ति भी आशीर्वाद से नहीं होगी परन्तु पुरुषार्थ द्वारा ही होगी। अन्त में यही कह कर समाप्त करती हूं कि 'यह वक्त जा रहा है' इसलिए हमें चाहिए कि हम सब पुरुषार्थ कर अपने जीवन को सजा लें और साथ-साथ ईश्वरीय सेवा से इस भूतल को स्वर्ग बनाने में अपना सहयोग दें। यही वक्त की पुकार है।

आध्यात्मिकता का महत्त्व

लेखक ब्रह्माकुमार रामलखन, जालन्धर

आज के मानव-समाज के हर पहलु पर गहन अध्ययन करने के उपरान्त सार में यही मिलता है कि ज्यों-ज्यों प्रगति होती जा रही है अर्थात् आहार, विहार, यातायात और मनोरंजन के साधन व उपलब्धियाँ बढ़ती जा रही है त्यों-त्यों मानसिक सम्बलता गिरती जा रही है। इसका कारण क्या है ? यदि कारण का पता चल जाए तो निवारण भी सम्भव हो सकता है ? तो आइये विचार करें कि सच्ची मानसिक सुख शान्ति की पूर्ति के साधन और स्रोत क्या हैं—भौतिक साधन या अलौकिक साधन अर्थात स्थूल साधन या सूक्ष्म साधन ?

जब हम मानव समाज की विभिन्न आस्थाओं पर विचार करते हैं तो मानव प्राणी मुख्यतः दो पक्षों में विभक्त मिलते हैं। एक भौतिकवादी और दूसरा आध्यात्मवादी। पहला चर्म-चक्षुओं द्वारा दिखाई देने वाली वस्तुओं पर ही विश्वास करते हैं और दूसरे इससे परे की भी कल्पना करते हैं। एक स्वयं को सर्वस्व मानते हैं तो दूसरे परमात्मा को करन-करावनहार मानते हैं। किन्तु दोनों ही विचारधारा वाले व्यक्तियों का लक्ष्य एक ही है—वह है मन की सच्ची सुख-शान्ति प्राप्त करना।

भौतिकता में सुख नहीं।

भौतिकवादी व्यक्ति दैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति व सुविधाजनक साधनों की प्राप्ति में सुख शान्ति की कल्पना करता है, इसलिए कल्पनाओं को साकार करने के लिए वह प्राकृतिक व कृत्रिम साधनों को प्रचुर मात्रा में संचित करने में जुटा हुआ होता है। जब किसी व्यक्ति को अपने से अधिक भौतिक सम्पदा में सम्पन्न देखता है तो उसके दिल व दिमाग में एक प्रकार की कसक-सी होती है। स्पर्धा ईर्ष्या का रूप धारण कर लेती है। वह दूसरे को रोककर आगे बढ़ना चाहता है। वह अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के हित को भुला कर अपनी इच्छाओं को प्रधानता देता है। इच्छा प्रबल हो जाती है, विवेक मलीन हो जाता है। उस समय वह सामाजिक व्यवस्था और सुख शान्ति पर ध्यान न रखते हुए समाज का शोषण करने लगता है। यही शोषण कलुषित प्रवृत्तियाँ अत्याचार, अनाचार-युक्त विभिन्न पाप कर्मों को जन्म देती हैं। इस प्रकार यह देखा जाता है कि चाहे कोई सम्पत्ति की उच्च अट्टालिका पर आसीन हो, उच्च पदाधिकारी हो, चाहे कोई उपाधि विभूषित व्यक्ति हो या भीमकाय बलशाली हो किन्तु उसके अन्तराल में स्नेह या शुभ भावना के बदले ईर्ष्या, द्वेष, और जलन की ही चिंगारी छिपी हुई होती है जो मन की सुख शान्ति को जला देती है। ऐसे व्यक्ति की हालत बहुत दयनीय हो जाती है। उपलब्धियों की चिन्ताओं में, साधनों के अभाव में बेचारा महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति कराह उठता है। दिन में आहें भरता है, रात में करवटें बदलता रहता है अर्थात आवश्यकतानुसार सर्व जीवनोपयोगी वस्तुएँ होते हुए भी इच्छा प्रधान व्यक्ति सन्तुष्ट नहीं होता। अतः भौतिक उपादान आज मानव-समाज को सुख शान्ति देने में सक्षम नहीं है बल्कि अधिकाधिक दुःख व अशान्ति का कारण बनता जा रहा है। इसकी एक आम वजह है कि आज का मानव हर शक्ति का दुरुपयोग कर रहा है। धनवान व्यक्ति अपने धन को वासना के साधनों में, रिश्वत, शराब, जुआ, अदालत बाज़ी जैसे असामाजिक कार्य में व्यय कर रहा है। इसी प्रकार बलवान व्यक्ति अपने शारीरिक बल को

निर्बल व असहाय की सहायता व रक्षा के बदले लूट-खसोट, मार-पीट अर्थात अपने से कमज़ोर को सताने में लगा रहा है। पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी व्यक्ति अपनी वाकपटुता से सत्य को असत्य व असत्य को सत्य सिद्ध करने में ही अपनी योग्यता समझते हैं। साधारण व्यक्ति को अपने प्रभाव के कारण गलत मार्ग-दर्शन देकर अपनी स्वार्थ सिद्धि करने में ही अपनी सफ़लता समझते हैं। इसी प्रकार उच्च पदाधिकारी कानून के माध्यम से सत्य निर्णय देना भूल गया है। गरीब, साधारण व अनपढ़ व्यक्ति असामाजिक शक्तियों के बीच पिसा जा रहा है।

वैज्ञानिक उपलब्धियों के बाहरी सुख में निहित दुःख

अब वैज्ञानिक उपलब्धियों पर भी विचार करें कि वह कहाँ तक सुख शान्ति के पूरक हैं। मनोरंजन के साधनों में रेडियो, ट्राँज़िस्टर, टेलीविज़न, सिनेमा अपना विशेष स्थान रखते हैं। किन्तु हर चिन्तनशील व्यक्ति ने अनुभव किया होगा कि फ़िल्मी अश्लील गीतों व वासना-युक्त दृश्यों से मानव अपनी सुख शान्ति और ही खो बैठता है। वासना की दबी हुई चिनगारी दिल व दिमाग को और ही व्यथित कर देती है। यहाँ तक कि अल्पकालीन सुख की तृप्ति के लिए या किन्हीं भावनाओं की पूर्ति के लिए वह ऐसे विकर्म कर बैठता है जिसके फलस्वरूप या तो उसे जेल में जाना पड़ता है या वे आत्म-हत्या जैसा महा-पाप कर लेते हैं। स्वयं को समाज से तिरस्कृत समझते हैं। सिनेमा (सिन—मा) का अर्थ है—आप-राध की जननी। आज सिनेमा ने छल, कपट, चोरी, धोखेबाज़ी, मिलावट, रिश्वत, ज़हर भरा प्यार सिखाकर, देखिये तो सही, समाज का कैसे विकृत रूप बना दिया है।

यातायात के साधनों ने यदि एक ओर आवा-गमन में सुविधा प्रदान की है, समय व शक्ति की बचत की है तो दूसरी ओर चिन्ता व अशान्ति को भी जन्म दिया है। बच्चा स्कूल गया किन्तु वापस घर आने में माँ-बाप को सन्देहात्मक चिन्ता बनी होती है कि कहीं दुर्घटना न हो गई हो। सच भी है आज मृत्यु दर (Death Rate) में ६०% दुर्घटनाएँ ही शामिल हैं।

इसी प्रकार इस समय आणविक अस्त्रों को सुरक्षा का सबसे बड़ा साधन माना जा रहा है। किन्तु ज़रा गहन विचार करके देखें कि क्या आज विश्व सुरक्षित है। आज यदि रूस के लिए अमरीकी आणविक शक्तियाँ काल रूप बनकर तैयार हैं तो अमरीकी नागरिकों के लिए रूसी आणविक शक्तियाँ। इसी प्रकार अन्य राष्ट्र भी एक-दूसरे को समाप्त करने के लिए अपनी सारी शक्तियाँ लगा रहे हैं। पाकिस्तान जैसे अति गरीब देश भी जहाँ पर कि नागरिकों के लिए दोनों समय भोजन मिलना भी दुर्लभ हो रहा है, क्रोधाग्नि में जलता हुआ पड़ोसी देशों के मानव प्राणी को समाप्त करने के लिए देश को बेचकर भी अणु बम बनाने की होड़ में लगा हुआ है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आणविक शक्तियों का प्रयोग मानव के रक्षात्मक कार्यों में नहीं बल्कि विनाशात्मक कार्यों के लिए प्रयोग करने की योजना बनी हुई है। अतः भौतिक व वैज्ञानिक साधन तथा उपलब्धियाँ सुख शान्ति के लिए नहीं बल्कि निरन्तर दुःख व अशान्ति का कारण बनती जा रही हैं।

पौराणिक आध्यात्म

अब मानव के दूसरे पक्ष को भी देखें जो ईश्वर पर विश्वास रखते है। ऐसे विचारवान व्यक्ति भाग्य को प्रधान और कर्म को गौण मानते हैं। ऐसे भावना-प्रधान व्यक्ति सुख दुःख का कारण ईश्वर की इच्छा समझते हैं। वे पिछले जन्मों के संस्कार को भी मानते हैं पर यह नहीं जानते कि संस्कार कैसे बनाया और बिगाड़ा जा सकता है। होने वाली आपदाओं से भयभीत मानव प्राणी ईश्वर की खोज में नाना प्रकार के मार्ग अपनाता है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो घर गृहस्थ को ही जंजाल समझते हैं। पहले बड़े प्रेम से शादी करते हैं, बच्चों को जन्म देते हैं और फिर

जब पालन-पोषण में अनेकानेक समस्याएँ आती हैं तो हार मानकर बच्चों को रोता-बिलखता घर में ही छोड़कर स्वयं भगवान को ढूँढने जंगल में चले जाते हैं। कुछ लोग यात्राओं को अपनी मुक्ति शुद्धि और पापों के विनाश का साधन समझते हैं। जब तीर्थ यात्राओं से वापस आते हैं और अपनी यात्रा का अनुभव सुनाते हैं तो उसमें उनके अथाह दुःख और अशान्ति की ही गाथा भरी होती है। चेहरे पर भी पहले से भी अधिक खिन्नता प्रतीत होती है तथा उनके कार्य-कलापों में, आचार-विचार में कोई नवीनता व दिव्यता नहीं दिखाई देती है। कुछ लोग कर्म-काण्ड में, यज्ञ, हवन व दान-पुण्य के द्वारा अपनी सद्गति व मोक्ष का रास्ता ढूँढते हैं किन्तु मानसिक इच्छा मान, शान, कीर्ति व प्रत्यक्षता से ओत-प्रोत होती है। फिर सच्ची सुख-शान्ति कहाँ ? कुछ लोग देवी-देवताओं की आराधना, पूजन, कीर्तन तथा मानव-रचित कपोल-कल्पित देवताओं की जीवन कहानियों को पढ़कर अपना सर्वोच्च कल्याण समझते हैं। अपने-अपने धर्म-ग्रन्थों के आधार से अपने दुश्मनों को भी जानते हैं, दूसरों को बताते भी हैं पर विकारों से दूर रहने की या यों कहें कि विकारों को मारने की शक्ति उनमें नहीं होती। दिनोंदिन अधिकाधिक विकारों में फँसते ही जाते हैं फिर चिल्लाते भी जाते हैं कि 'हे प्रभु, विषय-विकार मिटाओ'। इसी प्रकार रोते-बिलखते सुख शान्ति के अभिलाषी मानव प्राणी जीवन समाप्त कर देते हैं परन्तु वेद शास्त्र, पुराणों को पढ़कर अपने इष्ट के समान सम्पन्न नहीं बन पाते। क्योंकि न तो बनाने वाले का ज्ञान है और न विकारों को मारने की शक्ति है। ऐसे व्यक्तियों की दशा ठीक उसी प्रकार होती है जैसे दिशा भ्रम हुए राही की, जो अन्धेरी रात में अपने निर्दिष्ट स्थान तक पहुँचने के लिए व्याकुल भटकता रहता है।

कुछ विचारवान धर्मावलम्बी व्यक्ति ऐसे भी हैं जो ईश्वर को शाश्वत तो मानते हैं परन्तु परमात्मा के वास्तविक परिचय से अनभिज्ञ होने के कारण उदासीन हैं। उपरोक्त भक्ति के सर्व साधनों को अन्धविश्वास मानकर करना नहीं चाहते हैं। इस प्रकार के लोग प्रत्यक्ष फल देखना चाहते हैं जो विवेक सम्मत हो। जो बुराईयाँ सामान्य लोगों में होती हैं जब वे वही बुराइयों पण्डितों, पुजारियों, भक्तों में भी देखते हैं तो ऐसे पाखण्डियों के प्रति उनमें तिरस्कार की भावना पैदा होती है। वे समझते हैं कि यज्ञ, दान, पुण्य तथा तीर्थ यात्राएँ तो धनवान व्यक्ति ही कर सकते हैं फिर तो परमात्मा को गरीब निवाज कहना गलत है तथा हठ क्रियायें व हठयोग भी केवल हृष्ट-पुष्ट नवयुवक ही कर सकते हैं; निर्बल, बूढ़े, बालक या नारी के लिए यह अति कठिन है तो ये वर्ग परमात्मा को कैसे पा सकते हैं। इस प्रकार वे इन्हें पौराणिक युक्तियाँ एवं लेखकों की मन गढ़न्त बातें मान बैठते हैं। धर्माचार्यों द्वारा धर्म के नाम पर भ्रष्टाचार, अनाचार, पाखण्ड, आडम्बर देखकर लोग ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए भी ईश्वरवाद से विमुख होते जा रहे क्योंकि आध्यात्मवादियों में कोई दिव्यता, महानता व विशेष गुण नहीं दिखाई देता। अध्यात्म को शक्ति भी कहा गया है किन्तु देखा गया है कि विभिन्न धर्मों का जामा पहनने वाले लोग अधिक आलसी, भीरू, कायर व घबराने वाले होते हैं। अर्थात भौतिकवादी विकारों के उत्पादक हैं तो धर्म शास्त्रवादी उनके ग्राहक हैं। इस प्रकार अन्त में भौतिकवादी और धर्म शास्त्रवादी दोनों ही दो दिशाओं से आकर एक ही सड़क पर मिल जाते हैं और फिर एक ही दिशा में दौड़ लगाने लग जाते हैं। अपनी बलवती इच्छाओं की पूर्ति के लिए अल्पकाल की सुख की कल्पना के लिए धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय को पैरों तले कुचलते हुए व्याकुल भटकते रहते हैं। अन्ततः दोनों प्रकार से समाज दुःख और अशान्ति की दलदल में फँसता ही जा रहा है। अन्तर सिर्फ इतना है कि एक अपने को अध्यात्मवादी कहने वाले देवी-देवताओं, धर्म संस्थापकों, विभिन्न

धर्म प्रचारकों व ऋषि मुनियों के उपासक हैं। अपने-अपने धर्म ग्रन्थों के पाठक हैं तथा भौतिकवादी किसी सिनेमा के, किसी अभिनेता या अभिनेत्री के पुजारी हैं और किसी रोमान्टिक, अश्लील या जासूसी उपन्यासों के पाठक हैं।

सच्चा अध्यात्म

अब समझना यह है कि वह कौन-सा आध्यात्मिक ज्ञान है कि जिसको प्राप्त करने से मानव सर्वशक्ति स्वरूप, निर्भय, सुख शान्तिमय अपने को अनुभव करने लगता है। वह है 'स्वयं का ज्ञान।' आध्यात्म का अर्थ ही है आत्मा से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन करना अर्थात् चर्म चक्षुओं से परे ज्ञान चक्षु द्वारा अध्ययन करना। आत्मा क्या है, इसका क्या रूप है, कहाँ से आई है, और अब इसे कहाँ जाना है, आत्मा का क्या धर्म है और क्या कर्म है, किस प्रकार आत्मा पुण्यात्मा से पापात्मा या पतितात्मा बनती है और फिर कैसे पतित से पावन बन सकती है? आत्मा का सही अविनाशी सम्बन्धी कौन है आदि आदि। इसी प्रकार परमात्मा कौन है, क्या करता है, कब आता है, कहाँ रहता है और आत्मा का परमात्मा से क्या-क्या सम्बन्ध है और हर सम्बध से वह क्या-क्या देता है? ब्रह्मा के दिन और ब्रह्मा की रात का वास्तविक अर्थ क्या है? सृष्टि चक्र कब और कैसे पूरा होता है? कल्प वृक्ष क्या है? इन सब विषयों को यथार्थ रीति जानना और समझना ही सच्चा-सच्चा अध्यात्म को जानना है।

सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान अर्थात रचयिता और रचना का ज्ञान स्वयं परमपिता परमात्मा ही कलि-युग के अन्त में आकर देते हैं। इस सुन्दर सुहावने युग को पुरुषोत्तम संगम युग कहा जाता है क्योंकि आत्मा अपने परम प्यारे ज्ञान सागर बाप (परम+आत्मा) परमात्मा के निश्चित रूप से आकर मिलन मनाती है। ज्ञान सागर परमपिता शिव ही हम आत्माओं को सच्चा ज्ञान देते हैं कि हम देह नहीं बल्कि ज्योति बिन्दु, अजर, अमर, अविनाशी आत्मा हैं। इस शरीर में भृकुटि के मध्य में विराजमान हूँ जहाँ से इस शरीर द्वारा सारा कार्य करती हूँ जैसे कि आँखों द्वारा देखना, कानों द्वारा सुनना, मुख द्वारा बोलना आदि-आदि। यह शरीर मुझ आत्मा का नौकर है और स्वयं आत्मा इस शरीर रूपी रथ की मालिक हूँ। मैं आत्मा मन, बुद्धि और संस्कार सहित हूँ। मैं मन, बुद्धि द्वारा कहीं भी सेकेन्ड में भ्रमण कर सकती हूँ। मुझ आत्मा ने अनेकों बार शरीर रूपी वस्त्र बदल-बदल कर विभिन्न पार्ट बजाये हैं। परमपिता परमात्मा अपना परिचय देते हुए कहते हैं कि मैं अजर, अमर, अविनाशी परम आत्मा हूँ, अजन्मा हूँ, अकर्ता हूँ और अभोक्ता हूँ। वे हमें परमपिता, परम शिक्षक, परम गुरु, प्रिय साजन के रूप में अपने सर्व सम्बन्धों का बोध कराते हैं तथा ज्ञान सागर, शान्ति के सागर, पवित्रता के सागर, आनन्द के सागर का प्रत्यक्ष अनुभव कराते हैं और साथ ही सृष्ट के आदि, मध्य और अन्त का ज्ञान और सर्व शास्त्रों का राज़ समझाते हैं। कल्प पूर्व की भाँति पुनः अब कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के पुरुषोत्तम संगम युग पर परमात्मा शिव फिर से अपना कार्य कर रहे हैं।

वास्तव में महाभारत वर्णित युद्ध भी इसी समय का है। महाभारत अर्थात महाभारी लड़ाई मानसिक लड़ाई है। शरीरधारी दुश्मन को मारना सहज है किन्तु मानसिक दुश्मन अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को मारना सबसे दुष्कर है। आज सारा विश्व इस महाभारी लड़ाई के मध्य खड़ा है। इस रूहानी युद्ध में स्थिर रहने वाला ही युधिष्ठर है। इस आध्यात्मिक ज्ञान को अर्जन करना ही सच्चा अर्जुन बनना है। ज्ञान रूप गदा से पाँच विकारों को मारने वाला ही भीमसेन है। ब्राह्मण कुल की लाज रखने वाला ही नकुल है तथा दैवी गुणों को धारण करने वाला सहदेव है। रामायण में वर्णित युद्ध भी इसी समय का है। वही समय पुनः आ चुका है जबकि परमपिता परमात्मा जन्म मरण के चक्र में आने

(शेष पृष्ठ १६ पर)

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक एवं प्रकाशक, 151 ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D) 178

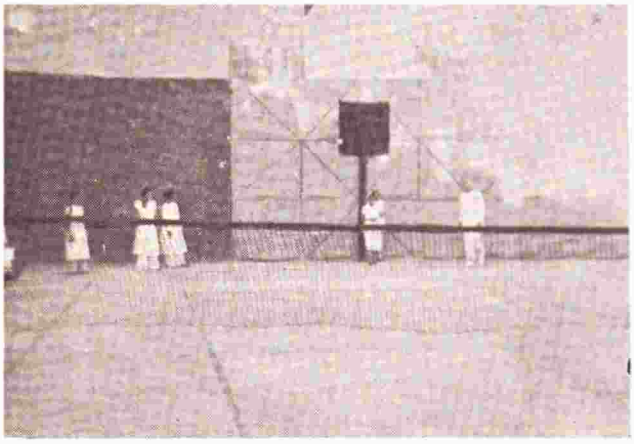

खेल का ड्रेस नहीं पहना हुआ तो कोई बात नहीं। वे अपने पूरे ड्रेस में होने पर भी पूरी स्फूर्ति से खेल खेलते थे। चित्र में वे दाहिनी ओर खड़े दिखाई दे रहे हैं। कौन-कौन खिलाड़ी किस ओर होगा, शायद यह इस बात पर विचार हो रहा।

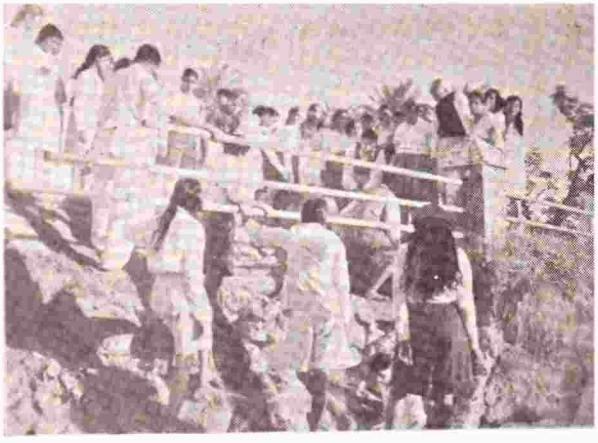

यहाँ, ऊपर दायीं ओर, बाबा और ममा बृज कोठी के बाहर के मार्ग को, वर्षा ऋतु के बाद टूटने पर पुनः सुधारने की योजना बना रहे हैं। साथ में शक्ति सेना उस योजना को क्रियान्वित करने के लिये तैयार दिखाई दे रहे है। स्वयं बाबा और ममा भी 'कर्मयोगी' का कर्त्तव्य कर दूसरों को प्रेरित करते थे।

पहाडी पर, शान्त वातावरण में योगाभ्यास करते करते कुछ ब्रह्मा वत्स ध्यानावस्था में चले गये हैं। बीच में बाबा बैठ शिव बाबा की न्यारी गति-मति को देख रहे हैं। सचमुच प्रारम्भ से ही शिव बाबा ने बहुत ही रमणीय रीति से अध्यात्म की शिक्षा दी। वह अद्भुत शिक्षक जो ठहरा।

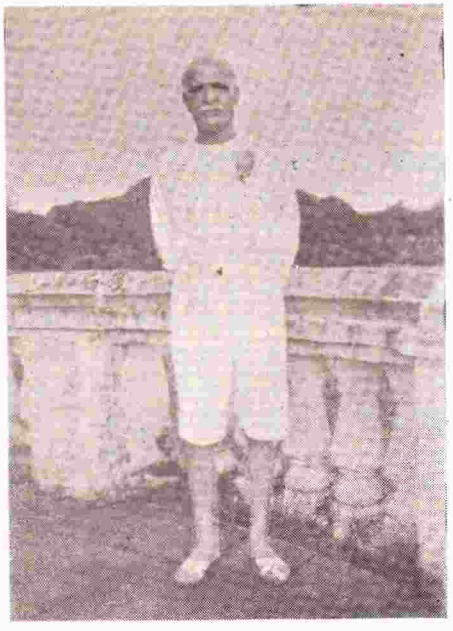

बाबा का शरीर वृद्ध होने पर भी वे स्वयं का विद्यार्थी ही अनुभव करते। पढ़ने के अतिरिक्त वे खेलने में भी पीछे न रहते। लगभग 80 वर्ष की आयु में बाबा खेलने के भेष में यहां दिखाई दे रहे हैं। कमर सीधी बदन चुस्त, एक कप्तान की तरह खड़े हैं वे।

Regd. No. D (D) 178

बिहार के राज्यपाल भ्राता ए० आर० किदवई जी और उनकी धर्म पत्नि को ईश्वरीय सन्देश सुनाने के पश्चात् पटना के बहन भाई उनके साथ खड़े हैं।

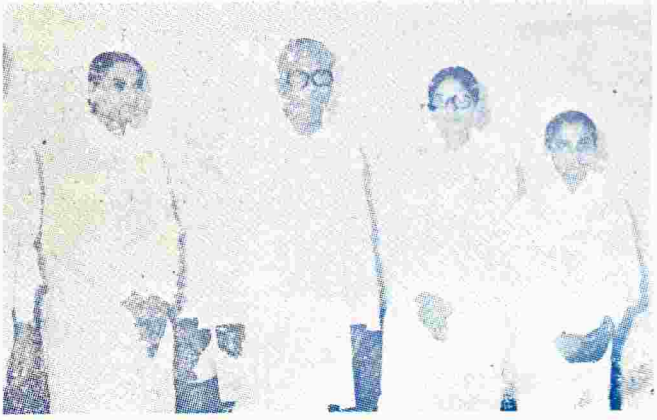

गुलबर्गा—लातूर में सेवा के समय पधारे हुए केन्द्रीय कानून मंत्री भ्राता शिव शंकर जी के साथ वहां के भाई-बहन खड़े हैं।

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल हमीरपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं। साथ में डी० सी० हमीरपुर, ब्रह्माकुमारी कृष्णा व ब्र० कु० गीता खड़ी हैं।

बाटा नगर में आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन के समय दादी निर्मलशान्ता जी शिव बाबा का सन्देश सुना रही हैं।

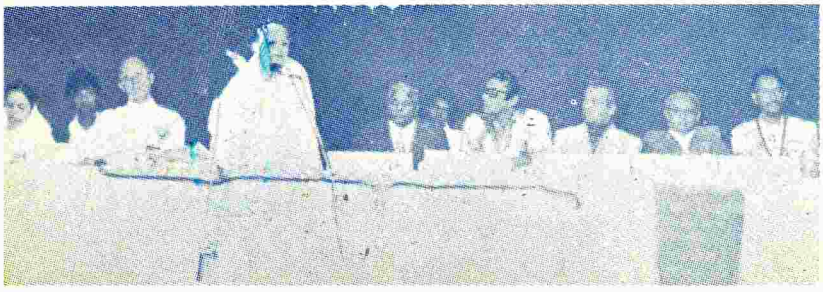

मोरीशस में मानव-रक्षा सम्मेलन में ब्र० कु० निर्मलशान्ता जी ईश्वरीय सन्देश सुना रही हैं मंच पर बसन्त राय (मिनिस्टर आफ इन्डस्ट्रीज एण्ड कामर्स) मेयर नन्दू चन्द जी, प्रो० डी० बी० राममूर्ति, स्वामी कृष्ण नन्द जी बैठे हैं।